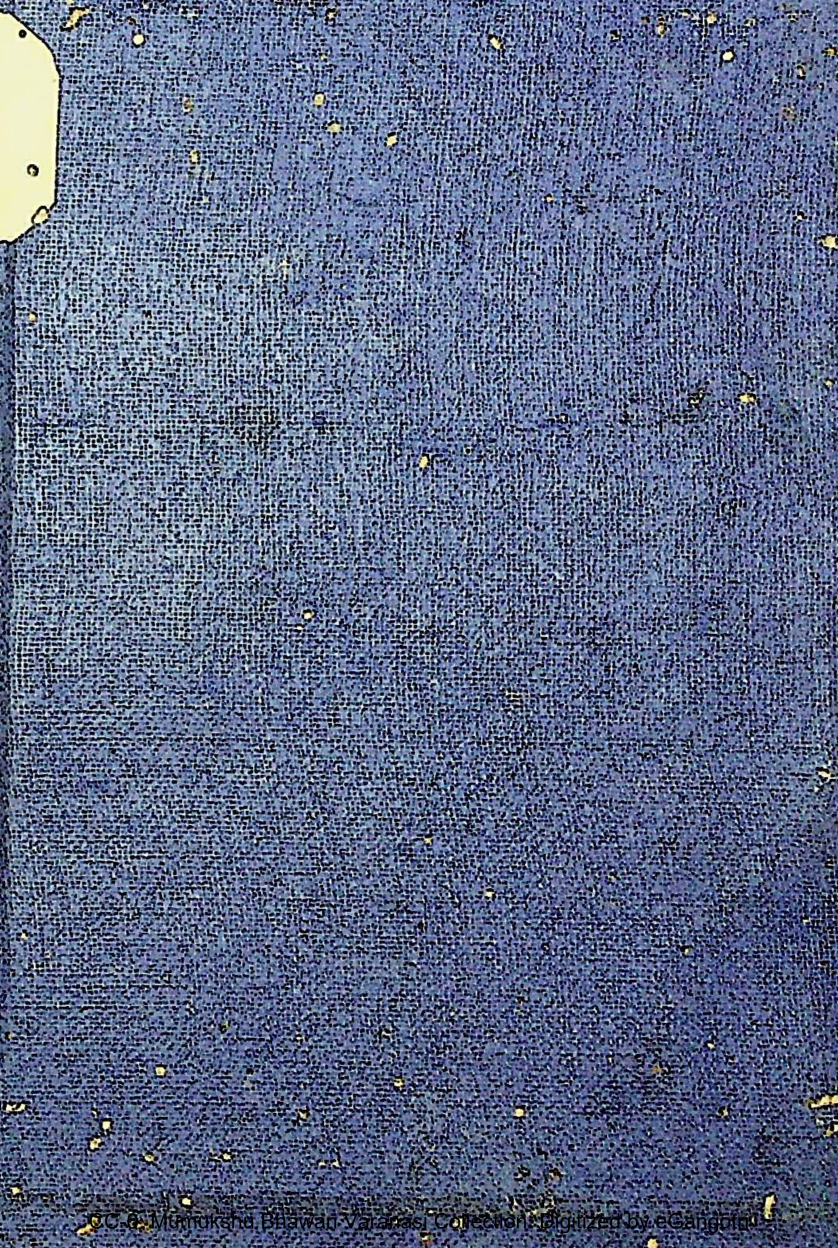


कीर्ति लता



लेखिका—

सिद्धि श्री १०८ श्री महारानी श्री लक्ष्मी जी कृपा
पात्राधिकारिणी श्रीमती श्रीपरिहारिन माँ जी
सा० जू देई देवी, रीवाँ राज।

आगे ... पत्र लगा है

0152,1NKI,6 0755

JO

नाथ

कीर्ति-लता



कीर्ति-लता



लेखिका—

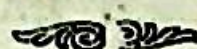
सिद्धि श्री १०८ श्री महारानी श्री लक्ष्मी जी कृपा
पात्राधिकारिणी श्रीमती श्रीपरिहारिन माँ जी
सा० जू देई देवी, रीवाँ राज।

प्राक्कथन

श्रीमती माँ जी साहिबा की रचनाओं का सातवाँ संग्रह 'कीर्तिलता' नाम से पाठकों के समक्ष उपस्थित किया जा रहा है। इसमें उनकी रची हुई कवित्त और सवइया हैं, जिनमें उन्होंने भक्तिभावना के साथ साथ; भारत की दशा की ओर भी भगवान का ध्यान खींचा है और भगवान् से प्रार्थना की है वह शीघ्र भारत को दुख मुक्त करे। आशा है यह रचना सर्व साधारण को प्रिय लगेगी।

नरसिंह दास शुक्ल

आत्म-निवेदन ।



भगवान् का नाम किसी न किसी रूप में लेते रहना ही जिनके जीवन का ध्येय है, और जो जीवन के एक एक छन, प्रभु चिन्तन में विताना चाहते हैं, वे ही वास्तव में, मानव, अथवा मानव ही क्यों, वरन् समस्त जड़ एवम् चेतन के वास्तविक कल्याण चाहने वाले हैं। भगवत् भजन अलक्ष्य में सर सन्धान के समान है। शब्द की शक्ति अनन्त होते हुए भी शब्द की साधना अनन्त नहीं है, वह सीमा के भीतर की वस्तु है। इस सीमा को महर्षियों ने समय समय पर अनेक नाम दिये हैं। कोई तो शब्दों को मन्त्रों की सीमा के भीतर बांध कर, प्रभु नाम का जप एवम कीर्तन करने की विधि बताते हैं, और कोई संगीत की परिधि में ला शब्दों की लड़ी बनाकर भगवान को रिझाने के लिये विह्वल होने का संकेत करते हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जिनका कहना है कि जिस भी रूप में हो, भगवान् का नाम लेते रहना श्रेयस्कर एवम् प्रेयस्कर हैं। इन तमाम साधनों में सत्य केवल एक है, अर्थात प्रभू का नाम भजना, उसी भजन एवम् भक्ति भावना को 'कीर्तिज्ञता' के पृष्ठों में, कविता की परधि में लाकर, व्यक्त करने का प्रयत्न किया है। इस पुस्तक में जो शब्द आये हैं, वे दीनानाथ के गुण गान के लिये उपयुक्त हैं या नहीं, इसके गुणागुण का विचार विद्वान पाठक ही कर सकते हैं, हाँ पर आत्मनिवेदन के निमित्त यहाँ इतना ही कहना है कि इन शब्दों को दुहराकर प्रेमी पाठकों के हृदय में यदि क्षण मात्र के लिए भी दीनानाथ के चरणों के प्रति कुछ अनुराग उत्पन्न हो सका तो लेखिका अपने परिश्रम को सफल समझेगी।

लेखिका

॥ अर्पण ॥

॥ कवित्त ॥

गोविन्द गिरधारी मुरारी कृष्ण दीनानाथ,
भक्तन हितकारी श्री चरण प्रणाम है ॥
स्वजन शरण दे निबाही प्रथा गुण गान,
महिमा त्रिलोकी सरकार की तमाम है ॥
भाव के निधान सदा दासन प्रमोद दीन,
आपके सुशरण में ही विभु विश्राम है ॥
दासी कीर्ति प्रार्थना श्रवण धार सुख कन्द,
कीर्तिलता अर्पण स्वीकार प्रिय श्याम है ॥

—:०॥०:—

कीर्तिलता

॥ जै श्रीमन्न दीनानाथजी की ॥

* १ *

दीन हितकारी दीनानाथ नाम जप भारी ।
गाय गाय गुन गान आनँद बढ़ाऊँगी ॥
ध्याऊँगी सरोज प्रेम नेम चर्ण माधव के ।
हियहरषाया चित्त बैखरी बसाऊँगी ॥
करन अय सेवा निरभेवा गिरधारी की ।
तनमन धन प्राण अरघ बनाऊँगी ॥

प्रेम नेम चाव चर्र्ण दर्शन कै आठो याम ।
कीरति बनाऊँ प्राण नाथ को रिझऊँगी ॥

* २ *

नाम है अनोखा कृष्ण वेद नहिँ पायो पार ।
शेष शिव शारदा को सुलभ न ज्ञान से ॥
विपति विनाशी नाशी ताप के निवासी उर ।
गाथ गुन गान भरो आनँद महान से ॥
है चरण आशी काटि फाँसी यम यातना की ।
खाशी त्रास नाशी चरण सेवा इमान से ॥
जनम बनावो कोह मोह भ्रम द्रोह छोड़ ।
कीरति के इष्ट दीनानाथ पग ध्यान से ॥

* ३ *

नर० जन्म पाय कर्म दीनानाथ सेव हेत ।
चरन सरोज की उपासना प्रधान है ॥
शिव विधि सनकादि पद रज हेत नेत ।
करत अनेक लहै आनँद महान है ॥
ऐसो है कृपाल नाम गाय भव ताप जाय ।
सविध सनेह प्रेम पद निरवान है ॥
मोहन मुरारी के पदारविन्द धार उर ।
कीर्ति बनावै छेम श्रेष्ठ यह जहान है ॥

* ४ *

गाय गुन रिझावे श्याम सुन्दर बिहारी जी।
आय प्रान जीवन निवाहो यह रीत का॥
बिन पग धारे बानी अब ना तुम्हारे नेक।
दरस दिखावो टालि जगत अनीत का॥
छाई अँधियारी दास दुखित निहारी कर।
मुरारी उजियारी राख पद भै भीत का॥
दीनानाथ सुनिये पुकार दीन कीरति की।
चर्ण धारि प्रियतम निवाहो ये रीत का॥

* ५ *

पावन पवित्र नाम दीना नाथ गाय गाय।
पातक अमोध धोय जन्म को सुधारूँगी॥
दरश परस करि चरन सरोज राज।
प्रेम नेम धारि गति बिगड़ी सम्हारूँगी॥
मानूँगो न अब तो बिकाऊँ बिन मोल सेव।
देखि देखि मूर्ति प्रमोद उर प्रसारूँगी॥
अपने सनेही प्राण नाथ कृष्ण मोहन के।
सुयश बखानि पुनि कीरति उधारूँगी॥

* ६ *

दया के निधान हो महान गुन खान श्याम।
दीनानाथ दीनन की याद तो करोही गे॥

स्नेह दायलुता भरी है अंग पोर पोर।
अपने गुन स्वै अनुकूल तो सरोही गे ॥
कौन ना विचार ऊँच नीच जाति वर्गन की।
भीलनी के जूठे बेर प्रेम को भरोही गे ॥
आर्त हरन ताप तीनहूं निवारन पद।
तारन भव कीर्ति को शरण वरोही गे ॥

* ७ *

करि दृढ़ प्रेम श्री पदारविन्द मोहन के।
गाय गुन गान मोद आपके लसी रहै ॥
साँवली सलोनी छवि निश दिन हिये धारि।
प्राण वारि माधुरी हँसन में फँसी रहै ॥
दृग अरुणार सुकुमार हैं वात्सल्य धारे।
तिरछी विलोकन हृदय में बसी रहै ॥
प्रेत रीत शृंखला लगाय जप ध्यान मंत्र।
कीर्ति यह दीना नाथ शरण कसी रहै ॥

* ८ *

गोविन्द गोपाल कृष्ण माधव मुरारी विभु।
बनवारी गिर्धारी बलिहारी श्रीमान पै ॥
यतन अनेक करि पावत दरश विधि।
योगी जप यज्ञ ज्ञान अन सन ध्यान वै ॥
पारब्रम्ह त्रिभुवन निधान सुख दान हैं।

दरस सुलभ होत गुन गन गान पै ॥
कीरति के दीन नाथ दीन पै कृपाल होत ।
तन मन धन वारि पद निरवान पै ॥

* ९ *

छूटी न छुटाये लगन लगी मोहन सँग ।
कृपा दृष्टि दीनानाथ जू आप ही करेंगे ॥
दृढ़ विश्वास आस चरनन में राखि सदा ।
विरहानल देह जारि वारि दृग भरेंगे ।
प्रेम वस्त्र धारि सकुच जगत निवारिके ।
मूर्ति माधुरी निहारि पद धाय परेंगे ॥
बनिहै बनाये अपनाये दीन दासन को ।
कीरति के प्रीतम चित्त निर्मल करेंगे ॥

* १० *

कौन है कृपाल अन्य तुम सम दीनानाथ ।
अखिलेश आपकेही चरण समाऊँगी ॥
गौतम की नारी तारी अधम उधारी पद ।
रज बलिहारी शिर धरि सुख पाऊँगी ॥
जन मन रंजन दुख भंजन पदारविंद ।
गोपिन अधार साँई सुयश कमाऊँगी ॥
कीरति के प्राण धन जीवन सनेही पद ।
उर निवसाय प्रेम आनंद बढ़ाऊँगी ॥

* ११ *

आय श्याम सुन्दर समाय जाव लोचन में।
मोचन विपति नाम आप का मुरारी है॥
काम क्रोधमद लोभ मत्सर विकार नास।
मम उर कंज वास कर गिर धारी है॥
माया आपकी है विभो करुणा कटाक्ष देहु।
अघ मन हारी करो शरण सुखारी है॥
कीरति बनावन हेतु सेवा प्रदान करो।
दीनानाथ नाम शुभ दास हितकारी है॥

* १२ *

दया दृष्टि हेरि दीनानाथ अब शर्ण देहु।
है रहें उदास दास कब अपनावोगे॥
पावैगे त्राण नाथ कैसे बिन चरन सेव।
कै कृपा दयालु कब अनंद वर्सावोगे॥
पाये बिन दर्श तर्स आँख की न जात श्याम।
मूरत मनहारी प्यारी कब दर्सावोगे॥
आवो फिर बिहारी ज्यों उठायो भाग रिकर।
कार्ति हित कारी कलि भाकँब उठावोगे॥

* १३ *

बूड़त उधारयो गजराज बृजराज तुम।
भार्त उबारि शरण दासन को राखिये॥

प्रेम वश्य खाये बेर जूठे भीलनी के प्रभु।
आर्तों के बन्धु जन सुदामा सम राखिये ॥
जैसे गीध गणिका अजामिल पुनीत कीन।
तैसे दीन भक्त अपनाय अब राखिये ॥
ह्वैगे पुनीत जग जीत नाथके अपनाये।
पद गुन गान प्रेम कीरति दे राखिये ॥

* १४ *

दृगन बनाय द्वार हृदय बनाय धाम।
बाणी में विराजि प्रौण आनँद भरा करो ॥
प्रेम नेम सेवा में राखि जनन कष्ट हरो।
बिगड़ी बनाबो प्राण जीवन कहा करो ॥
आठो याम ध्यान श्री पदारविन्द दे गोविंद।
जन सुख देन हेत चित्त में रहा करो ॥
कीरति के दीनानाथ दीनन शरण राखि।
करुणा कटाक्ष हेरि निरभै करा करो ॥

* १५ *

अब तो निवाहो शरण निज राखि नाथ जी।
ह्वै रहे अनाथ दीनानाथ दया कीजिये ॥
कामना मरीचिका अनेकध विदारि जीव।
रक्षक सदा ही दया दासन पै कीजिये ॥
गुन गान ज्ञान देहु ध्यान पद कंज प्रभु।

जगत प्रमाद की व्यथा को दूर कीजिये ॥
राखिये समीप कीर्ति आश्रित शरण जानि ।
त्रिभुवन नाथ अब देर नहीं कीजिये ॥

* १६ *

ऐ नट नागर आगर सुख सागर प्रभु ।
दरश देखाय यो आनँद बरसाइए ॥
बंसी बजइया ओढइया कारी कामर के ।
नंद के दुलारे प्यारे मेरी गैल आइये ॥
खायो चोरि माखन चरायो बन गाय नाथ ।
गिरधर गोपाल दया दीनों पै लाइये ॥
कंज दृग वारे कंज माल उर धारे सुचि ।
पद अरुणारे कीर्ति शरण लगाइये ॥

* १७ *

जाओगे मुरारी कहाँ बबेस बरेगी पद ।
प्रेम नेम सेवा में उलझि नाथ जावोगे ॥
गुन गन गाय गाय तुमहिं रिझावै नाथ ।
भक्ति भाव बन्धन ते छूटन न पावोगे ॥
मोल बिन बिकिहै न रुकिहै विषम मग ।
भुलिहैं तुम्हें ना चाल कितनी बनाओगे ॥
करुणा पुकार दीन कीरति की आर्त हर ।
परत श्रवण हरि प्याय देहीं धावोगे ॥

* १८ *

गिरि को उठाय जन त्रास से बचाय हरि ।
पायो नाम गिर धर ऐसे प्रति पाल हो।
बूड़त उबारयो बृजराज बृज दास काज।
नासि गर्व देव राज गोविंद गोपाल हो।
मूढ़ अज्ञान पुनि विरिंचिहूँ क मेटि नाथ।
रचि रूप ग्वाल गाय रुचिर कृपाल हो।
कीरति के नाथ भार कलि का हटाय देहु।
राखहु शरण याद करहु दयाल हो।

* १९ *

दीनानाथ दीन की पुकार बार बार यह।
शर्णां राखिबे में काहे करत अबार है।
महिमा अनंत शिव बिधि हूँ न पायो पार।
भगवान तूंहो तो त्रिभुवन आधार है।
माधव मुरारी बनवारी नाम गाय गाय।
सुगति बनावै नाम सर्वसुख सार है।
दास हित कारी श्री पदारविंद सेव हेत।
दान दे निहाल करो कीरति तुम्हार है।

* २० *

कल ना पड़त पल नैनमें समाय गई।
मोहन मुरारी छबि देखि मति भूली है।

रूप के निधान श्याम सब गुन खान यश।
मोहन महान सुल रस बस फूली है॥
लागत कहूँ ना मनदरश तुम्हारे बिना।
कुल कान जान माल कृष्ण बिन धूली है॥
मानूँगी तो अब ना चरण बिन सेव लीन्हें।
कीरति तो दीनानाथ सेवा सुख झूली है॥

* २१ *

आइये बिहारी लाल गलियाँ हमारी प्रभु।
पद रज शीश धारि हिय हरषावैंगी॥
रूप की पियासी आँख दरश हुलासी श्याम।
नाम की उपासी प्रीति आनँद बढ़ावैंगी॥
छबि मन हारी बलि हारी बन वारी तोपै।
तन मन सौंपि तुम्हें वारि वारि जावैंगी॥
कीर्ति के दीनानाथ रात दिन हगन राखि।
गुनन गोपाल गाय जनम बनावैंगी॥

* २२ *

मीत है सुदामा रंक राखि ज्यों शरण लीन।
त्योंहिं जन शर्ण राखि करुणा पसारिये॥
वेदहू न पायो प्रभू ऐसे देव ईश तुम।
आर्त कस पावैंगे विचार औन धारिये॥
जप तप यज्ञ ज्ञान ध्यान से सुलभ नाहिं।

गुन गान महिमा प्रदान दास तारिये ॥
चीर के बढ़इया टेर गज की सुनइयाँ ।
कीर्ति गोसइयाँ आय दीनन उबारिये ॥

* २३ *

दीनानाथ दीन बन्धु दीनन की आस देख ।
फिर कृपा दृष्टि भारत पै लाना पड़ेगा ॥
होत धर्म हनि कलि नाश हेत आवो तब ।
बढ़ि रहा अधर्म फिर हटाना पड़ेगा ॥
धेनु द्विज दास क्लेश सहि ना सकतनाथ ।
बसुधा दुखित देख श्याम आना पड़ेगा ॥
कीर्ति के दीनानाथ दीन जन करि सनाथ ।
विषयिन प्रवाहो से तो बचाना पड़ेगा ॥

* २४ *

मुर दैत्य मारि नाम पायो है मुरारी कृष्ण ।
मारि तृष्ण माधव सुधार दास कीजिये ॥
धाये गज हेत त्योंहि आवो सुख हेत चेत ।
भार्त रखइया रक्षा दासन पै कीजिये ॥
गर्व मर्दि ब्रह्मा शिव और सुरराज हित ।
दम्भियों का नास दास सर्ण वर्ण कीजिये ॥
कीरति के दीनानाथ आश्रित पदार विंद ।
है रहे तुम्हाँर कृपा वार वार कीजिये ॥

❀ २५ ❀

तुमको बजाना श्याम बाँसुरी पड़ेगा फेर !
गोपिन रिझयार गैल आनाही पड़ेगा ॥
विन देखे सूरत सलोनी दृग नीर ढरे।
मीठे रवि दरशन दिखाना ही पड़ेगा ॥
मोर मुकुट सोहै माथ राधा के प्राण नाथ।
फिर झाँकी बाँकी वह दिखाना ही पड़ेगा ॥
कीर्ति के दीनानाथ लकुट लै चरायो धेनु।
वही गायन कष्ट से बचाना ही पड़ेगा ॥

❀ २६ ❀

दृग ना देखात और श्याम रंग छाय रह्यो।
मन ना थिरात बिन धारे गिरधारी के ॥
श्रवण सुनात अन्य वाणी ना सोहात कुछ।
हिय उमगात गाय गुन मन हारि के ॥
जग से न नात बात और ना बिचारी जात।
नैन बैन बस औण ह्वैगे बनावरी के ॥
प्रेम नेम सेवा समाँधि लागि कीरति विभु।
स्वाँसस्वाँस नाम दीनानाथ सुखकारी के ॥

❀ २७ ❀

निरखन दे झाँकी बाँकी मुर्ली धर माधव।
नट खट बड़े कहीं जाव न दृगन से ॥

जन्म कोटि धारि नर जन्म की कमाई पाई।
ललक विशेष ह्वै हटो ना दृगन से
कसक मिटाऊँगी लगाय पद उर श्याम।
चसक बढ़ाऊँ दर्श पंकज दृगन से
मनको दृढ़ाऊँ गुन गाय के रिझाऊँ तुम्हें।
कीर्ति के दीनानाथ करु कृपा दृगन से

❀ २८ ❀

प्रभु करुणा निधान तुम्हें याद है की नाहीं।
जब कृष्ण की सारो गिर्धारी ह्वै गये रहे
सवरी प्रीति सानीं गीध गणिका पुनीत कै।
प्रेम की कहानी श्रेष्ठ आपही कहे रहे
गज टेर श्रौण धार दौड़े थे गरुड़ छाड़।
सुरत भुलाही कब चक्र को गहे रहे
विपति निवारि जग बन्द फन्द काटि दीन।
कीरति की वार नाथ मौन क्यों धरे रहे

❀ २९ ❀

आवो तो आवो नाथ बेर ना लगावो अब तो।
आश्रित हैं पदारविंद कल ना धरेगी
बिन मन मोहन मुकुन्द चित चोरन के।
धीरज धरयगी कैसे आनँद भरेगी
मनहै न पास ह्वै लगिगें कपाट मग।

हेर्त दिन जात दर्श कब हम करेंगी ॥
कीर्ति के लोचन दुख मोचन के पद फँसे ।
दीनानाथ दीनानाथ नाम रटि तरेंगी ॥

❀ ३० ❀

दिन दिन मनमोहन से प्रीति सर साय ।
हिय हरषाय अति आनँद मनावेगी ॥
प्रीतम मुरारी श्री गोविंद मन हारी मंजु ।
मूरत निहारि श्याम रग में समावेगी ॥
विरह वियोग कल पड़त न दिन रात ।
नाम जप ध्यान धर जीवन बनावेगी ॥
कीरति के दीनानाथ तूही जीवन अधार ।
धारि दृढ़ आस जन्म जन्म गुन गावेगी ॥

❀ ३१ ❀

माधव गिर धारी की मनोहर मृदुल छबि ।
कौन है त्रिलोक जाको मन नहीं हरिगो ॥
मुकुट शिमौर पंख कुंडल अमोल श्रुति ।
अलक घुघुराली पै मन ना उलझिगो ॥
पीत वसन धारी कटि काछनी सवारी तू ।
हँसनि बिलोकि उर कञ्जना विकसिगो ॥
लटक त्रिभंगी मन भृंगी मैन गंजी अंग ।
वंशी स्वर सुखद सुनि कीर्ति ना भरिगो ॥

❀ ३२ ❀

लोचन ललाने श्याम तबसे है ध्यान काम ।
उठत ना उठाये पल डर्ति वियोग से ॥
दरसन की झाँकी बाँकी देखि मति छाकी है ।
मूरत प्रभाकी हिय मिलत संयोग से ॥
निरत सत कर्म ले जन्म पुनि बार बहु ।
कबहूँ सुलभ प्रभू होत जप योग से ॥
ताप त्रै हारी कीरति दीनानाथ सुखकारी ।
आतमा प्रसन्न श्री पदारविंद भोग से ॥

❀ ३३ ❀

दुखियन की बिनती वृज राज अब मान ।
बान तेरी कृष्ण है गरीबन सम्हार की ॥
बनिहै बनाये सब बिगरीं बिगारे तब ।
आवो हृदयेश भजै मूरत उधार की ॥
पंकज चरन उर धारै जग भीत टारै ।
गावे गुन ध्यावे कहैं जै जै जग तार की ॥
जन्म बनावे नाथ आनन पग रज धारि ।
आवो कीर्ति प्राणनाथ आरत पुकार की ॥

❀ ३४ ❀

दृग प्यासे दरश ललक मुख चन्द्र हेरि ।
निमिष हेरानी माना कबहूँ निहारे ना ॥

मति गति थाकी झाँकी देखि मन मोहन की।
सुरत भुलानी नेक तनहूं सम्हारे ना ॥
रूपकी लोनाई कहि जाय ना मिठाई ऐसी।
उपमा हेरानी वाणी वचन उचारे ना ॥
ऐसोहै अनूप वह त्रिभुवन भूँप चूस।
अनहद जूस छुधा कीरति निबारे ना ॥

* ३५ *

सुनिये मुरारी यह विनै है हमारी प्रभु।
दीन हितकारी भार मेदिनी निवारी है ॥
गुन गन गाऊँ पाऊँ मोद तोष उर भर।
दे चरन पंकज कर जन रखवारी है ॥
तन मन धन प्राण मान वारि शर्ण लेव।
अभै कर उठाय देन कह गिर्धारी है ॥
कीरति सप्रेम नेम सेवा निसवास देहु।
दीनानाथ कष्ट हरहु दासी तुम्हारी है ॥

* ३६ *

हृदय निवास करो ईश जगदीश नाथ।
विनै हमारी यह श्रवणन में धारिये ॥
काम क्रोध मोह नाशि दासन शरन लेहु।
हिय की हुलास भक्ति सुखमा पसारिये ॥
आश्रित जन ओर हेर नंद के किशोर जी।

चरन प्रकास करि तामस विगारिये ॥
दीनानाथ दीन बन्धु बिगरी बनाय जाहु ।
भारत उद्धार करि कीरति को तारिये ॥
* ३७ *
ललक लगी है मुख कमल विलोकन की ।
दृग ना धरै धीर फरकै दिन रात है ॥
अहहो मन भावन कि नाही वतावो नाथ ।
लाख समझाऊँ मन मानत न बात है ॥
होत ना सम्हार मन सेवा हेत अरझत ।
अव तो लगावो पद सेव जल जात है ॥
दीनानाथ आवोगे नहीं की साँची बात कहो ।
कीरति को श्याम बिना कुछ ना सोहात है ॥
* ३८ *
दृग तर्स दर्स बिन वाणी गुन गान बिन ।
कर त्यों सेवा हित बन्दन बिन माथ है ॥
हिय की तरस विन चरन लगाये उर ।
जिया की तरस बिन जीवन के नाथ है ॥
श्रौण की तरस गाथ आनँद दरश बिन ।
अंग अंग तरसै लगाये विन साथ है ॥
तरस मिटावो पटावो रार बादियन की ।
कीरति की प्रेम सेवा दीनानाथ हाँथ हैं ॥

* ३९ *

मोल बिन बिकानी सुनि नाथ की मधुगाथ।
लालक लगी दिन रात यश सुना करै॥
जन हित कारी प्राण नाथ जग जीवन के।
पावन चरित्र धारि वाणी से पिया करै॥
सात्विक पवित्र नाम गोविंद गोपाल कृष्ण।
गाय गुन गान मोद हिरदे भराकरै॥
सुखमा आगार श्री पदारविंद दीनानाथ।
कीर्ति हर्षाय हार करि उर धराकरै॥

* ४० *

हमतो हैं चेरी दीनानाथ पग आनन की।
झारि झारि आनरज शिर में चढ़ावेगी॥
बनिहै अब जन निर्वान गति सुधरि है।
बार बार चर्णमे सप्रेम शीश नावेगी॥
आनँद उमंग दृगन प्रेम सलिल ढार।
करि अनुराग दृढ़ अस्मृत नहावेगी॥
रहवैं बिकल बिन सेवा पद मोहन के।
मिलिहै मुकुंद अवसि कीर्ति हर्षावेगी॥

* ४१ *

अब तो है दर्स बिन कल ना बतावो श्याम।
कैसे हम धैर्य धारि दिवस बितावैगी॥

दृगन बसी वह त्रिभंगी छवि मोहन की ।
मन ना थिरात कहो कैसे बहलावैगी ॥
कलपत दिन जात नींद आवत न रात ।
कुल मरजाद मान चरण चढ़ावैगी ॥
ढूढ़े न मिलि हो असङ्ख्या मुनि मानसके ।
पद गुन गान गाय कीर्ति गहि लावैगी ॥

* ४२ *

काहु की न रोकी रहूँ पद लपटान चहूँ ।
साँची प्रीति चर्ण वरुँ मोहन मुरारी के ॥
न्यारा सुख सार चहूँ सुखमा अपार लहूँ ।
पग उर हार करूँ दीन हितकारी के ॥
जग से बिलग रहूँ विषै नहिं चाह धरूँ ।
तन मन वारि पद नटवगिंर्धारी के ॥
दीनानाथ के समान है न कोऊ लोकन में ।
कीरति पुकार श्रेष्ट सेवा भव तारी के ॥

* ४३ *

ब्रह्म ज्ञान है महान वेद निरमान कीन ।
जप तप यज्ञ दान धर्म सत्य वाना है ॥
अबलो न पाये भेद वेद के बखान वाले ।
दीन बन्धुका प्रबन्ध कहै कौन जाना है ॥
गणिका अजामिल गीध सवरी गज आदि ।

वेद भिन्न जाति त्यागि आवहीं प्रधाना है ॥
कीरति अनाथ गुन गान नाथ गाय गाय ।
कृष्ण नाम जाप बिना ठौर ना ठिकाना है ॥

❀ ४४ ❀

जाय बैकुण्ठ काह करब हम दीनानाथ ।
आतमा मिलन हेत श्रम न देवावैगी ॥
मोर पंख धारे अंग मैन ऐन मद गारे ।
साँवली छबि देखि दृग सेवा कमावैगी ॥
कालिन्दी बंशी वट गोवरधन वृन्दा बन ।
गाय ग्वाल नंद यशोदा न वहां पावैगी ॥
वृज रज लोटिके महान ज्यो अक्रूर भये ।
कीर्ति पद रज छाड़ि वृज सें न जावैगी ॥

❀ ४५ ❀

आवहु तो श्याम अब नेक ना विलम्ब करो ।
चर्ण उपासी चाहे सेवा दुख हरन की ॥
यतन अनेक कीन मन नहीं तुष्ट होत ।
बिन गुन ग्यान भक्ति तारन तरन की ॥
कल ना पड़त मन धीर ना धरत अब ।
दरश दिखावो दान अभय करन की ॥
कीरति के दीनानाथ नाम स्वर रोम रोम ।
आठोयाम ध्यान श्री चर्ण उर वरन की ॥

❀ ४६ ❀

सर्व गति नाथ हाँथ आय के सनाथ करो।
दीनबन्धु भारत अनाथ की गोहार है।
बढ़िगा अधर्म धर्म आपके पदारविन्द।
बिन पग धारे कलि राजकी ज़ोहार है।
दासन बचावो पद देके अपनावो नाथ।
विपति नसावो आर्त स्वजन तुम्हार है।
सन्निधि में राखि त्रास देहु सब नाशि हरि।
कीर्ति दृढ़ आस दीनानाथ की तो वार है॥

❀ ४७ ❀

महिमा पदारविन्द वेद हूँ ना पायो पार।
ऐसो पद पंकज कहो कौन ना भजेगा॥
सुर हित त्रिविक्रम ह्वै चर्न बलि राख्यो है।
कौन जप-यज्ञ जहाँ चरन ना सरेगा॥
हनूमान चर्ण देखि मन ना अघान कबो।
चर्ण प्रेम छाड़ि कौन कर्म दृढ़ रहेगा॥
विधि चरन धोई शिव जटा को भिजोई है।
कीर्ति पद रज मोई आर्त जना तरेगा॥

❀ ४८ ❀

कंज कर अनूप जन गिरिहैं न कूप में।
दासन पर दया अभै करों उठाये हैं॥

महिमा अनंत वृजगोपिन के कंत विभु।
टारि वृज विघ्न स्वयं धेनु को चराये हैं॥
सुरराज माखि वृज नासन की मन ठान।
शर्ण जन राखि गिरि करपै उठाये हैं॥
करकी करि आस्र चर्ण वरन की हुलास।
कीर्ति दीनानाथ कष्ट स्वजन बचाये है॥

* ४९ *

ंज दृग खंजन में अंजन कृपाल रेख।
द्रवत दयाल आर्त जन शर्ण देखे से॥
रैं अनुकंपा भगवंता भव ताप हरै।
है जब विराग जात दीन भाव देखे से॥
ावत तुराय सेवा हेत भक्त जगत तजि।
देत निज निकेत पद्म नाभ जन देखे से॥
ोर्ति के दीनानाथ दीनन करिके सनाथ।
गहे ज्यों सुदामा हाँथ प्रेम कष्ट देखे से॥

* ५० *

महाराजा तो त्रास हृदय नाहिं।
प्रजा रुठि जावे कुछ हरजा न मानूँगी॥
न पिता माता भ्राता रुठै परिवार सुत।
चिंता कुछ नाहिं नाथ पद ना बिसारूँगी॥
ता जग त्राता श्रीगोविन्द के पदारविंद।

उर निवसाय जन्म आपन सुधारूँगी
कीरति सरवस्व आधार दीनानाथ तुम्हीं।
पद रज शिर धारि भीति भव टारूँगी
* ५१ *
आवो तो मनाऊँ श्री पदारविंद शिर धर।
जगत भ्रमाय जीव बन्धन करावो ना
योग जप यज्ञ ध्यान नहि जानूँ विधि।
केवट हितकारी वह चर्ण दुरावो ना
गौतम की नारी तारी पद बलिहारी प्रभु।
पद रज देहु दीन बन्धु तरसावो ना
कीरति के दीनानाथ दीनन गोहार परी।
दर्श दिखावो मन मोहन छिप जावो ना
* ५२ *
एहो दीन-बन्धु दीनानाथ दीन रखवारे।
दासन की बार है पुकार भौन धारि
प्रेम नेम सेवा विस्वास आस चरनन में।
आश्रित जनो की दसा तो कुछ बिचारि
दीजिये पदारविंद नीर सिरी गोविंद जू।
मुरझान प्रेम लता सींचि पाप जारि
आइये पधार नहिं कीजिये विलम्ब नेक।
तारी है अहल्या अब कीरति को तारि

* ५३ *

एहो दीनानाथ नाम पायो ज्यों अनूप यह ।
दीनता निवारी नाम जाप ताप हारी है ॥
दीन रखवारी करि दीन बन्धु कहवाये ।
गुन गान गाय दास यम त्रास टारी है ॥
शबरी अजामिल गीध गणिका पुनीत भे ।
धन्य धन्य महिमा अपार गिरधारी है ॥
आय के उबार करो आर्त जन दर्श चहैं ।
करिवर उबारयो कलि कीर्ति की बारी है ॥

* ५४ *

प्रेम की गली दीना नाथ पगतली की धूर ।
धारि धारि शिर्षेश त्रिभुवन बढ़ाऊँगी ॥
प्रेम में रँगाय हाड़ चाम मास तन मन ।
नेह को बढ़ाय प्रीति रीति को दृढ़ाऊँगी ॥
प्यारे श्याम नाम की जहाँन चट-शाला खोलि ।
भरि काम अमृत पद प्रेम पढ़ाऊँगी ॥
कीरति बनाऊँ गुन गान नाथ गाय गाय ।
विरह वियोग कली चर्ण में चढ़ाऊँगी ॥

* ५५ *

मोहन मुरारी बिनै सुनिये हमार प्रभू ।
जीवन आधार कृपा भारत पै कीजिये ॥

आरत हरन आय करुणा बर्षाय जाव ।
रक्ष्यो हर वार जन शर्ण फिर लीजिये ॥
महि अकुलान प्रथा कलि उमड़ाय रही ।
दास सुख दान जन आपन तो कीजिये ।
कीरति दुख भारी ध्वजा नामम फहरान ।
दीनबन्धु दीनानाथ दर्श बेगि दीजिये ॥

* ५६ *

करिले सिंगार अंग जीव नर औसर ये ।
प्रियतम विभु पास तुम्हें जाना पड़ेगा ॥
दया की तो चादर शरण अंग वस्त्र धार ।
धरम शिर पाग अँग सजाना पड़ैगा ॥
बाँह सिंगार शंख चक्र हार तुलसिमाल ।
भाल तिलक धार प्रभु रिझाना पड़ैगा ॥
कीरति के दीनानाथ दीनानाथ नाम जाप ।
चरण गहि विषै जग हटाना पड़ैगा ॥

* ५७ *

आत्रो ना बोलावो कबौंपाती नापठाओ प्रभु ।
चूक ऐसी कौन अब ह्वै गहि राखी है ।
सर्व सुख हराम आराम तुम बिन नाहिं ।
प्राण शेष रहे नाथ कौन दुख बाकी है ।
बिसरे न सूरत सलोनी मन मोहन की ।

कसक करेज हाय फाटी जाती छाती है ॥
जीवन अधार भार भारत का टार अब ।
आवहु सर्कार यहाँ कीर्ति बिलखाती है ॥

* ५८ *

दृग भरि जात श्रवण कुछ नहीं सुनात ।
गद् गद् है गर्जात कहत न बात है ॥
अंग सब थर्थरात तन है डग मगात ।
कुछना सुहात अति मन अकुलात है ॥
पोर अंगुरीन में छाल परे दिन गिनत ।
आये न सनेही श्याम पद जल जात है ॥
अहहैं दीनानाथ अब चित्त प्रबोध देत ।
कोर्ति हमि आठो याम दिवस सिरातं है ॥

* ५९ *

मोहन सनेही श्याम आय फिर कष्ट हरो ।
प्रीतम तुम्हारे बिन जग में न सार है ॥
तन मन प्राण वार पद आन आस धार ।
काहे दर्श देत नहीं अखिल सर्कार है ।
हमतो बिरानी नहीं जन्म जन्म दासी चर्ण ।
कौन चूक धीर नाथ करते विचार है ।
कीरति पद रजकी उपासी श्री दीनानाथ ।
प्यासे दृग दरश इच्छु बिनै स्वीकार है ॥

* ६० *

हित कर पदारविंन्द श्रीगोविन्द जीव जग ।
छाड़ि फल अमृत जहर काहे खावोगे ॥
त्रिभुवन सरकार दयालू कृपाल नाथ ।
गति ले सुधार नहिं पाछे पछितावोगे ।
दीन ह्वै शरण आवो भ्रम तजि पद ध्यावो ।
करिहै जन जानि सुखी आस जब लावोगे।
कीर्ति के दीनानाथ सर्व बिधि सनाथ करै ।
गुनगान गावो तो अमर बास पावोगे ।

* ६१ *

देव हम देवाय दर्श माधव मुरारी का ।
भारत के आरत तुम्हारी अब बार है ॥
प्रेम पंथ मोहन के आय गुन गान करो ।
दीन मंडली पै दीनानाथ का पियार है ।
शिव विधि न पाये भेद वेद बिचार नहीं ।
महिमा अनंत कृष्ण नाम की बहार है ॥
कीरति के प्राणनाथ स्वजन सनाथ करे ।
शर्ण वास पाय भरो आनँद भँडार है ॥

* ६२ *

कोऊ कहि बावरवलावर बनावै मोहिं ।
जाने नहि कोऊ हाय हिरदे की लाग है ॥

छबि देखी जबसे बेमोलही बिकाय गयी।
प्रीतम गिरधारी के चर्ण चित लाग है।
छिन ना पड़त कल दरश वियोग व्यथा।
बाउर बतावै कस स्वाद शब्द ताग है॥
कीरति को माखौ चाहि धाधि रोज राखो अब।
मानैगी नहीं तो अब जागी पद भाग है॥

❀ ६३ ❀

आवो वृजराज दीनानाथ कृष्ण गिरधारी।
हिरदै बसाय प्रेम आरती उतारेगी।
कबसे वियोग दुख पावत शरण बिना।
गुनगान गाय गाय तनमन वारेगी॥
भ्रमत फिरत मन विषयन रात दिन।
आठो याम सेवा धारि पातक निवारेगी॥
बिना अपनाये दीनावंधु जन नसाय गे।
आयके निबाहो कीर्ति पद ना बिसारेगी॥

❀ ६४ ❀

पाय श्रीपदारविंद दीनानाथ शरण में।
पातक सब जन्म के धोय अब डारूँगी॥
कौन है कृपालु दीनानाथ के समान आन।
मूरति मनोहर पै प्राण वारि डारूँगी।
करि गुनगान ध्यान जाप दृढ़ नाम धारि।

कलि राज कर्म सर्व नासि पद डारूँगी।
कीर्ति भवतारन के शरण बनाय सब।
जगत विषै समेटि यमुना में डारूँगी।

❀ ६५ ❀

आवो एक बेर तो सुनाऊ दुख आपन मैं।
जब लों न आवोगे कसक नहिं जावैगी।
इन्द्री न मानत बिकल दिन रात करत।
कैसे प्राण जीवन सत कर्म कमावेगी।
दुनियाँ परिवार्बन्धु उधम् मचाय रहे।
बबंस बिकाय दीना नाथ हाँथ जावैगी।
कीरति अपनावो बिलंब ना लगावो नाथ।
काहू से न नात प्राण पद में लगावैगी

❀ ६६ ❀

हाय हाय करै तो हँसत घर गाम जग।
चुपके रहत तो कसक ना समात है
कैसे के जियै बिन दीनानाथ प्रेमी चरण।
जग से उदास मन मानत न बात है
आय गिरधारीजी देखावो, दया जन हेत।
कलपत दर्शबिन मन ना थिरात है
कीरति बिगाड़ो न बनाओ मन-हारी आय।
बिन पद पर्श पल युग सम जात है

॥ ६७ ॥

कहहु हे ऊधव मुरारी मुकुंद खबर ।
श्रवण सुनाव वृजराज यदु राजा है ॥
मात पिता बन्दि खोलि सुहृदन आनंद दै ।
अमित परिवारकरि व्याह सुख भ्राजा है ॥
कुब्जा से प्रीत कीन यह अनरीत कौन ।
सुना जात नाहीं जी कुनाम यह ताजा है ।
जाय समझाइयो सयान बुद्धिमान ऊधो ।
कीरति को छाड़ श्याम आवत न लाजाहै ॥

॥ ६८ ॥

जानी हम जानी और तुम हितकारी बड़े ।
मथुरा सँदेश कहि आयो तत काला है ॥
मोहन पठाये लेन हमको तुम आये अलि ।
पूछें हम तुमसे यह उचित गोपाला है ।
जबसे सिरी कृष्ण जन्म लीन तब से हम ।
तन मन वारि प्रीति पद नँद लाला हैं ॥
अब महारानिन निहार अपमान करै ।
मथुरा न जाब कीर्ति उर्यहै कसाला है ॥

॥ ६९ ॥

मोहन मन हारी जी भावन मनोहरछबि ।
दृगन बिलोकि हम आनँद कराकरैं ॥

प्रीतम मुरारी गिरधारी की सूरत पर ।
तनमन धन प्रान अर्पण कराकरै।
स्वप्न में न आई यह बात घात कारी हमैं ।
हा पछितात प्रीति करि दुख जराकरै।
मूरत सलोनी कीर्ति ध्यावन की ऊधो वह ।
कुबरी सोहाग पाय आसन गहाकरै
॥ ७० ॥

कुबरी से प्रीत श्याम मोहन की सुनि हम ।
बहुत सराहि उर आनँद बढ़ावैंगी
सुन्दर अनूप श्याम जोड़ा विपरीत नई ।
मोहन त्रिभंग टेढ़ कुबरी सोहावैंगी
नंद कुमर हंस नृप चेरी कागिनी सम ।
अंक श्री मुकुंद प्रभा अधिक बढ़ावैंगी
जोर चलत ऊधो तो पिटाइत जग डौंड़ी ।
कीरति गोविन्द अब कुबरी बढ़ावैंगी
॥ ७१ ॥

हमकों वियोग दीन भोगी अब कुबजा है ।
ऊधो समझाय कह दीजियो संदेश है
जैसे गुन विक्रम सुज्ञान खान यदुराज ।
चाल वों नाहिं यही सुनि बड़ी अंदेश है
जैसे सिरताज बृजराज पार ब्रह्म अहैं ।

मथुरा बिराजि तैसे राजन नरेश हैं ॥
कैसी मति ह्वै गै भगवान दीनानाथ जू की ।
कुवरी सनेही कीर्ति नाथ सरवेश हैं ॥

* ७२ *

ऊधो बसुदेव लाल ह्वैगे नंद लाल अब ।
कहत प्रथम बात दृग भरि जात है ॥
घर घर माखन चोराय खाय ओट भये ।
खोट की खोटाई कुछ कहि नहीं जात है ॥
वस्त्र चोरि आपन बनाय सब भाँति लीन ।
अबतो पर्देशी श्याम कुछ नहि नात है ॥
योग लिखि पाती दीन हीन सँग प्रेम कीन ।
कहो तो सयान ऊधो कीर्ति उर्समात है ॥

* ७३ *

ऊधो बताओ योग कहन ब्रह्म ज्ञानी तुम्हें ।
योग कैसे करै श्याम पद अहिवान है ॥
रोम रोम नाम कृष्ण माधव मुरारी रम्यो ।
कंठ माल अंग भष्म धारि नहिं जात है ॥
नैन मोहन वियोग नहिं सहन करत ।
चर्ण पखोटन चहै मानत न बात है ॥
अंग बिलखाय सग त्याग मान शेष रहे ।
आश्रित पदारविंद कीर्ति दिन जात है ॥

* ७४ *

पहिले से योग जो सिखाय देत श्याम हमै ।
तौनहिं पावत तन दुख ज्ञान ध्यान से ॥
दृग रूप लीन, छबि नूपम मुरारी जी के ।
श्रवण बेकाम कीन सुधा सम तान से ॥
आनँद अधर प्याय बाणी जीभ मुग्ध कीन ।
अंक लपटाये अंग ह्वै रहे वे भान से ॥
आपै समझावै आय जो पै ज्ञान चाह बढ़ी ।
कीरति का योग दर्श दीना नाथ श्याम से ॥

* ७५ *

एती बात श्याम से बुझाय कह दीजो ऊधो ।
तनमन धन वारि लीन सुख धाम को ॥
कुबरी सनेही निरमोही अब मुरारी को ।
आवत सुरति प्रेम नेम वृज वाम को ॥
मरबै विष खाय की बूड़ि यमुना में जाब ।
डर बृजराज नहीं नेक, इलजाम को ॥
कीरति के दीनानाथ राधेश्याम नाम रहे ।
जाहिकरावै जग कुबरी कृष्ण नाम को ॥

* ७६ *

मथुरा बसे तो कुछ हरजा नहीं है श्याम ।
यसुदा के कान्ह पुत्र देवकी बखान है ॥

ग्वालन समाज छाड़ि यदुराज भये अब ।
. रानिन सँग रमे सो सुयश जहाँन है ॥
नंद लाल छाड़ि वसुदेव लाल कहवाये ।
बाढ़ी यदु बंस ख्याति हर्ष वे प्रमान है ॥
कीरति के प्राण नाथ प्रेम नेम वृज छाड़ि ।
कुबरी सनेह कीन होत सुनि ग्लान है ॥

* ७७ *

हम बिन मोहन के धीर ना धरब ऊधो ।
योग रीत भावै नहिं हरि पद ध्यान है ।।
मथुरा बसे तो सुनिये हूं सुख होय हमै ।
गुन प्रभु गाय रहब विहीं वे भान है ॥
छाड़ब अब नाहीं निठुर मन मोहन का ।
कुबरी के है रहै जीवन धन प्रान है ॥
कुबरी मति दुबरी रम रँग रँगी अब ॥
कीरति बिकानी बिन मोल पग यान है ।

* ७८ *

आवत न माधव सिखावत प्रथा योग की ।
ऊधो सिखावो योग कुबरी सिरताज को ॥
रूप मन मोहन के हमतो बिकाय गई ।
अबना बने जी ध्यान ज्ञान आन काज को ॥
जाय के संदेश तुम मोहन सुनाय दीजो ।

आपन सह्मार करै पद यदुराज को ॥
हम गुन गान पद रज लपटाय गई ।
कीरति न छाड़ों जन्म जन्म वृजराज को ॥

* ७९ *

कबहूँ बजइहै फिर्बंसी श्याम कुंजन में ।
बिरह वियोग ताप कबहूँ बुझावेंगे ॥
कबहूँ लगइहैं उर हर्ष बढ़ाय हरि ।
कबहूँ इन नैनों में दृग अरझावेंगे ॥
कबहूँ चरइहैं गाय यमुना कछारो में ।
कबहूँ बिहारी लाल गलियों में आवेंगे ॥
कबहूँ देखइहैं दरश फिर कीरति को ।
साँची बोल ऊधो श्याम आवेगे न आवेंगे ॥

* ८० *

हमतो वियोग मरै कुबरी संयोग करै ।
साँचो साँची बोलो ऊधो ज्ञान के निधान हो ॥
तसैं हम दर्शन को कुबरी रस रंग में ।
तुम हो मुकुंद मित्र सीख दो कुनाम हो ॥
प्रीति रीत छाड़ि अब मोहन विरान भये ।
कुबरी सिखावै योग जाहिर जहाँन हो ॥
हम मन भावन के पद में बिकाय गई ।
कीर्ति बनि जायी वहाँ कुबरी का मान हो ॥

* ८१ *

पाती बाची जात नहिं दृग भरि जात ऊधो।
बनत लिखत नहीं आँसू गिर जात है॥
बार बार जिय को सम्हारै पत्र लेख हेत।
तड़पै कलेज अंग ढील पड़ि जात है॥
देखत जस हाल दीजो तस समझाय सो।
चाहत कहन कुछ कढ़त न बात है॥
आवन अवधि ताकि प्रान रुके पिंजर में।
कीरति वियोगी पद दुख ना समात है॥

* ८२ *

काह करदीन श्याम कल ना पड़त नेक।
भावत कछू ना बिन जीवन आधार के॥
घरकी सोहाय नहिं जग की सोहाय बात।
कसक कलेज दृग बर्छी अनुहार के॥
सूरत सलोनी अँग अँग यंत्र मंत्र बने।
मन हरि लेत श्याम जादू अस मार के॥
बावर सी ह्वैगै मति दर्श दीनानाथ बिन।
कीरति के रोग दोष दृग सरकार के॥

* ८३ *

सूखि सब शरीर गै दिन दिन दून गति।
मोहन मुरारी बिन धृक धृक प्रान है॥

खान पान भाव नहिं बात दूजी मन आवै ।
भावै तो निस दिन सलोनी छवि ध्यान है ॥
बावर मति ह्वैगे निहारे बिन दीना नाथ ।
लाज कान छूटि गई जानत जहान है ॥
प्रीतम निर्मोही निठुराई उर धारि लीन ।
कीरति बनावो आय शरण कल्यान है ॥

* ८४ *

हमें तो मोहन बिन जीवन पहार सम ।
नेकौ अब मोहन को सुध ना हमार है ॥
त्रिभुवन अधीश काहे चाह अब करेंगे ।
आश्रित पद कंज हमै श्याम आधार है ॥
दृग नहि माने बिन दरश मनावे लाख ।
मनना थिरात अंग अंग दरकार है ॥
दीनानाथ अहहें कबै निस दिना निहारै ।
कीरति के जीवन श्रीनँद के कुमार हैं ॥

* ८५ *

कब से निहोर करी मोहन मुरारी कृष्ण ।
आवो नहिं नाथ यह कैसो अनरीत है ॥
दीनानाथ दीनबन्धु दीनन शरन राख ।
अबना करत काहे दीनन से प्रीत है ॥
भारत पुकार मन मोहन श्रवण धार ।

भीत रंक कीन लीन पद जग जीत है ॥
कीर्ति नसाथ रही आवो जग जीवन धन ।
दासन सनाथ कर हर भव भीत है ॥

* ८६ *

हमतो अनाथ नाथ दरश सहारे बिन ।
दीनानाथ हाँथ गहि देहु अभैदान है ॥
करुणा निधान गुन ग्वान वार दीनन की ।
मोहन मुरारी बिना सूनाये जहान है ॥
दास हैं तुम्हार तुम दासन के सुख दान ।
बाढ़यो जो अधम दास राखो पग त्रान है ॥
उचित यही है कीर्ति शरण लगाय लेहु ।
नहीं फिर दीनानाथ नाम ही नसान है ॥

* ८७ *

दीन के सहइयां बलदेव जीके भइया ।
दुक्ख हरइया सुनइया टेर गज की ॥
भक्त सुख दइया खवइया बेरीं भिलनी के ।
भव उतरइया गोहार दीन जन की ॥
बंसी के बजइया ओढ़इया काली कामर ।
नंद के कन्हइया देहु झाँकी सुखद की ॥
काली के नथइया कंस वंस के नसइया ।
कीरति बढ़इया शरण भव तर की ॥

* ८८ *

मनके मनोहर गिरधारी जी चित्त धारी।
वनमाली दुख टाली मुकुंद आनँद के॥
इन्द्रिन दमन कारी हृषीकेश हृदयेश।
माधव मधुर गान ध्यान श्री गोविंद के॥
मोहन गोपाल लाल गोप्य उर निवासी हैं।
मुरारी अघ हारी दमोदर प्रति अंग के॥
दीन बन्धु दीनानाथ कृष्ण सुधा नाम जाप।
कीरति चित चोर श्री पद अरविंद के॥

* ८९ *

दृग रवि मीठे श्री दीनानाथ दासन पर।
कोटि अघ नास प्रिय नाम सू विहारी है॥
चन्द्रमा मन हरन कृष्ण आर्त शर्णदेत।
अच्युत पद देत हितकारी गिर्धारी है॥
पावन पतित नाम सुख के आगर श्याम।
बबंस दुख गंज बनवारी बलिहारी है॥
महिमा अनंत शेष पायो नहि अँत प्रभु।
कमला के कंत कीर्ति शर्ण को पुकारी है॥

* ९० *

जबसे दृग देखे श्रीकृष्ण की मोहन छबि।
विकल दरश हित हैगे बिन भान है॥

पंख फकाँय मिलन चाहत उड़न नित।
पर्वसबिलखात सो दुक्खितमहान है॥
मन हूं बिकान चर्ण श्रवण वरन गाथ।
रूप की मिठाई चाटि जीभ लपटान है॥
सुधबुध कीरति की श्याम रंग भोय गई।
अंग अंग तर्स रहे रोम रोम ग्लान है॥

* ९१ *

आय सुख देव फिर दरश देखाय जाहु।
दृग की पुकार वार वार रूप चाह है॥
भारत गोहार दीन माधव श्रवण धार।
पंथ दृग बिलोकि रहे करो पर्वाह है॥
हम विष ज्वाल कलि मारग बँड़ेर परे।
पग ठहरात नहीं करहु निवाह है॥
कब अपनइहो इत आय दीनानाथ जी।
कीर्ति पद सेवा हित राखत उमाह है॥

* ९२ *

हम तो सुनत रहीं दीनानाथ नाम भारी।
गणिका अजामिल पुनीत करि डारी है॥
गीध क्रिया कीन वासु चरन समीप दीन।
तारी रिषि नारी श्राप सुर सिला टारी है॥
ह्वैगे अभीत राज रिषि मुनि बंदि चरण।

श्रीकृष्ण दीनानाथ महिमा अति भारी है ॥
कलि व्यवहार बढ़ा भारत पखान मानि ।
कीर्ति हित कारी चर्ण धरने की वारी है ॥

* ९३ *

संकट निवार, सक मददगार गोविंद जी ।
दास रखवारी चीर द्रोपदी बढ़इया जू ॥
ब्रह्मा अज्ञान हरन ग्वाल वत्स आप बने ।
कौतुक निधान नोखी लीला रचाइया जू ॥
नद के कुमार भक्त वत्सल गोपाल प्रभु ।
गोपी मनहारी चोरी माँखन खवइया जू ॥
कलि भव जाल काटि शर्ण दे कृपाल अब ।
मेटहु कसाला कीर्ति भारत सहया जू ॥

* ९४ *

नंद के लड़ैते फिरि बाँसुरी सुनाय जाव ।
भारत जन दीनन की भारी गोहार है ॥
दुष्ट मद गारी संत शर्णन में धारी प्रभु ।
कीजै सुखारी कन्हइया जन तुम्हार है ॥
व्याकुल मन धीर्दे मुकुंद कर कृपा दृष्टि ।
चरन शरन राखि करिये सम्हार है ॥
करहुना अवार दीनानाथ वार कीर्ति की ।
द्रवहु दयाल कटै जगत खभार है ॥

* ९५ *

नैनन् के बैन नहीं बैन हूँ हैं नैन हीन।
  श्रौण सुख भीन कहै रूप की मिठाई को ॥
मन पद लीन अंग भान तजि दीन सर्व।
  कहिको बखान सकै नाम की निकाई को ॥
ब्रह्मा शिव सनकादि अष्ट बसुहुँसकादि।
  पृथक वरन नहीं अंत प्रभु ताई को ॥
वेद पर्पार ब्रह्म कीर्ति पद रज अनँद।
  पद गुन गान ध्यान धन्य सुखदाई को ॥

* ९६ *

हमरे तो दीनानाथ नाम का आधार सदा।
  रटि रटि नाम गुन गान मोद पाई है ॥
रूप की निकाई छवि अतिहीं प्रकाश छाई।
  कौन ब्रम्हाण्ड जिन दृगनना समाई है ॥
सेवा निर भेवा सुखदेवा प्रिय मोहन की।
  परमानंद श्रीकृष्ण पद की बड़ाई है ॥
कीर्ति लपटान सदा पद रज आनन में।
  दीनबन्धु दीनानाथ शरण सोहाई है ॥

॥ ९७ ॥

विश्व आधार भवपार कर बिलंब होत।
  दीनानाथ नाम दासन ताप त्रै हारी है ॥

बाढ़त अधर्म देखि सुध बुध भूली जात।
काहेना सहाय आय करत मुरारी है॥
रोज राज पंथ दृग आतुर निहार रहे।
आरत धरत नहीं धीरज दुखारी है॥
कीरति बनाओ दुख द्वन्द को छोड़ाय हरि।
सेवा पद कंजकी जनन आस भारी है॥

॥ ९८ ॥

हमतो समाय गई पद मन मोहन के।
गाय गुन गान नाम श्याम स्वास धार है॥
तनमन दीनानाथ चर्णन में वारि वारि।
निरभै रहत नाथ पद भव तार है॥
आतम औ ब्रह्म भेद जानन को मन नाहि।
इच्छुक सप्रेम सेवा मोहन मुरार है॥
कीरति बनाई लगाय पद रज जनम।
दीनानाथ शर्णाजन सुखमा आगार है॥

॥ ९९ ॥

साँची बतावो दीनानाथ दीनन हितकारी।
भारत उबार हेत कब पग धारोगे॥
कौन चूक धार नाथ बिलम लगाय रहे।
जन पै दया दृष्टि कब करि सम्हारोगे॥
शर्णागत वत्सल प्रभुजी अपनावो अब।

कलि वही प्रबाल घोर पातों उतारोगे ।
कीरति के दीनानाथ वेगि दौड़ि आवो प्रभु ।
बिषम बयारि बहै बिपति निबारोगे ॥

❀ १०० ❀

आये प्रात धाम श्याम जावो वहाँ दीनानाथ ।
जागे जहँ रात लाल दृग अलसान है ॥
कंत निसि जागी मै बिलोकि पंथ थाकिरही ।
प्यारे श्याम आये अब स्वाग ढंग ठान है ॥
अंजन अधर पीक गाल भाल जावक है ।
डगमगपग मुख चन्द्र कुम्हिलान है ॥
कीरति के प्राननाथ वहीं चले जावो तुम ।
गुन गान गाये दृढ़ चरण कल्यान है ॥

❀ १०१ ❀

मटकी पटक घूंघट उलट पट भट ।
बावर- बनायरी मन अट पट कैगो ॥
खटकी मटक मुकुट भृकुटी चटपट ।
ऐ बिकट बिकल बुधिसट पट कैगो ॥
अटकी अटपट पद नटखट सट ।
हट की नहीं मानी श्याम खटपट कैगो ॥
सटकी सुघटटकी अँग मैन कटपट ।
घटकी कली कीर्ति प्रेम घटघट कैगो ॥

* १०२ *

गुरुकृष्ण तात कृष्ण मात कृष्ण भ्रात कृष्ण ।
कृष्णहीं है भृत्य पुत्र प्रीतम सु दान के ॥
कृष्ण हृव्य कृष्ण कव्य यज्ञ श्रुवा दर्भ पात्र ।
कृष्ण मंत्र कृष्ण तंत्र कृष्णै कृत ज्ञान के ॥
कृष्ण इष्ट कृष्ण मित्र औ सुहृद सत्यचित्त ।
कृष्ण कृष्ण कृष्ण हैं जल थल सस्थान के ॥
सुगत कृष्ण जगत कृष्ण कीर्ति कृष्ण पूर्ती ।
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण पद निरवान के॥

* १०३ *

कृष्ण कृष्ण कहो जन कृष्ण नाम आर्त हर ।
जगत जगाय जागि पद रस पीजिये ॥
दुर्लभ नर जन्म पाय कुछ उपाय नाही ।
उमसिरान जाय सुकृत्त कब कीजिये ॥
आपन सामर्थ नाहि दास दीन भाव लाय ।
करुणा निधान शर्ण वर्ण मन कीजिये ॥
ज्यों ज्यों भ्रम छूटि जात त्योंत्यों अनुभौ में आय ।
दर्श देत दीनानाथ कीर्ति सुख भीजिये ।

* १०४ *

जब से दयालू दीनानाथ शर्ण वर्ण भई ।
तब से जगत संग लागत न लीक है ॥

जब से समाय दृग कृष्ण मन मोहन गे।
तब से जग श्याम बिनालागत फीक है।
जब से श्रवण गाथ अमृत मुरारी सुने।
तब से तो अन्य पंथ बात सब सीठ है॥
जब से गुन गान लीन इन्द्रिन जीत लीन।
कीरति बनावै गति कञ्ज पद बीच है॥

* १०५ *

धन्य धन्य धन्य धन्य धन्य भाग्य भारत की।
करुणा निधान दीन हेत दीनानाथ है॥
वृज में चरायो गाय लकुट कर्धारि प्रभु।
दीन गाय दासन को करि हैं सनाथ है।
मुकुट कुण्डल वनमाल अधर्बंसी धर।
आइहै गोविन्द फिर बनि यदुनाथ है॥
सुरराज माँखि राखि वृज गिरि धारी नख।
भार्कलि उठइहैं यहाँ कीर्ति के नाथ हैं॥

* १०६ *

धन्य धन्य धन्य धन्य धन्य भाग्य भारत की।
करुणा निधान दीन हेत इत आयो है॥
वृज में चराये गाय लकुट कर्धारि प्रभु।
दीन वार सर्व धर्म कर्म कै दिखायो है॥
वृजराज कमुकुट कुंडल बन मालापै।

आर्त उद्धार हेत सहज भेष आयो है।
सुरराज मख राखि वृज गिरधारी लख।
कीर्ति के नाथ यहाँ भार कलि उठायो है।

* १०७ *

दीनानाथ आय भार भारत हटाय रहे।
जानत अयान जग नाहि गिरधारी को॥
कुल मान भान रत बढ़ाई अंज्ञान बने।
छोटे कार्य स्वयं करत देखे मुरारी को॥
मोर मुकुट कुंडल की आभा विलोके विन।
चीन्हत नहीं अनंत लीला बिसतारी को॥
वसुधा उद्धार हेत धरि अनंत रूप स्वै।
कीर्ति श्रम चर्ण देखि बिनवै बिहारी को।

* १०८ *

ए हो दीन बन्धु दीनानाथ दीन हितकारी,
भीर पड़ी दासन पै वार क्यों लगाई है।
गज की पुकार श्रौण धारि अतुराय धाय,
ध्रुव-प्रहलाद कष्ट टारयो यदुराई है।
सभा, बाच द्रोपदी की आपहीं बचाई लाज,
गिरी धारि ब्रज विघ्न पल में नसाई है।
दूजो महाभारत दिखात फेरि भारत पै,
भारत अनाथ नाथ कीजिये सहाई है॥

* १०८ *

भारत-हितैषी 'कीर्ति' दीनानाथ आवो फिर,
गीता को सुनावो, अपनावो कृष्ण जी आज।
धूम मची भारत में रण के सुनात शोर,
वरुमन के जोर सिंधु बूड़े फिने जहाज॥
गाढ़ अंधियार वर्ण चार एक सार भये,
सर्व कुल-चार-जाति धर्म की उठाई लाज।
तेरे बिन न्यायी को अन्यायी को बतावै कौन,
रावरे पधारे बिन हाय प्यारे यदुराज॥

* १०९ *

ब्रज के बिहारी गिरधारी जनतारी प्रभु,
भीति भय हरि प्रथा सत्य की प्रचारिये।
ह्वै रही अनीत छुआ छूत का विसर्जन है,
द्विज, क्षात्र, वैश्य, शूद्र समता विगारिये॥
कर्म निज छाँड़ि अनाचारी ह्वै गवाँई लाज,
रण की चढ़ाई जानि दीनन उबारिये।
गाय ज्ञान गीता कियी 'कीरति, सुभीता नाथ,
पारथ के मीत क्यों न भीत निरवारिये॥

* ११० *

मोहन मुकुंद नँद नंदलाल यसुदा के,
भक्त के निवाहिबे की रीति तो सदा रही।

भारत में भीर पड़ी जब तब आये प्रभु,
कहो तो पधारे बिन कैसे वसुधा रही।
स्वजन शरण राखि दीनानाथ नाम पायो,
कलि प्रबल आर्त वार्कीजिये कृपा हरी।
सरब विभूति आपही की ना नसावो कीर्ति,
दास अपनावो फिर दिखावो मूर्ति माधुरी।

कवित्त * १११ *

दीनानाथ आय भार भारत हटाय जन।
दीन रखवार शरण राखिये कृपाला जू॥
मूढ़ कलि कीन जग जानत अयान नाहिं।
जानि जन आपन प्रभु कीजिये निहाला जू॥
बहुरि धोवाय चर्ण पंकज जन आर्त जान।
केवट के मीत द्रवहु दीन पै दयाला जू॥
कीरत बनावैं ,गुन गान नाथ गाय गाय।
करि दया दयाल जग मेटहु कसाला जू॥

॥ दोहा ॥

जै जै दीनानाथ पद ॥ वारम्बार प्रनाम॥
अवनि अनेकन रूपधरि ॥ भार्त कीर्ति सुख धाम॥

सवैय्या * ११२ *

सुनिये दीनानाथ बिनै हमरी,
चरनों पर आस लगी ही रहै।

मन मोहनि मोह न मूरत श्याम,
सलोनी हिये मे बसी ही रहै ॥
उलझी सुलझै न कबौ अँखियाँ,
पिया प्यारे से लग्न लगी ही रहै ।
गुन गान अनूपम ध्यान सदा,
करि चाह प्रमोद लसी ही रहै ॥

* ११३ *

दृग मूरत श्याम बसी जब से,
तब से कल एक घरी न परै ।
शिर मोर कि पंख गले बनमाल,
सुकुण्डल झलक कपोल परै ॥
अँग सोह पिताम्बर काछनियाँ,
लकुटी कर बंसी सुधा सी स्वरै ।
अरुणारे त्रिभंग धरे पग को,
लखि कीर्ति चर्ण आनंद करै ॥

* ११४ *

फिर आय उधार करो बसुधा,
यशुदा के लला जन आस धरे ।
कलि धार प्रवीह बढ़ी इतनी,
अँधियार निसा जन कैसे तरे ॥
बिन आये निवाह करी को भला,

करुणा कर नाथ त्रिलोक हरे।
पद कंज धरो अवनी तम नाश,
मुरारी ये कीरति चर्ण वरे ॥

* ११५ *

दीनानाथ पुकार सुश्रौण धरो,
जन भारत आय सम्हार करो।
युग युग अवतार धर्यो सुख देव,
सोई विधि आय सहाय करो ॥
फहरान कुशासन केर ध्वजा,
कलि तिमिर्र्भू उजियार करो।
गुन गान करे सब मोद भरे,
पद कीरति हेत प्रदान करो ॥

* ११६ *

दीनानाथ दयाल कृपा तो करो,
हम चाहें तुम्हें पद हेत लरे।
गज की तो पुकार सुनी भर कान,
अजा मिल गीध पुनीत करे ॥
रिषि गौतम नारि तरी पद से,
वह इष्ट हमार दुराय धरे।
मनि हैं हम साँच गोविन्द तुम्हे,
कीरति कल्यान प्रदान करे ॥

❀ ११७ ❀

कब अइहो बिहारी हमारी गली,
मग जोहत नैन थिराय रहे ।
श्रुति चाह सुनै मधुरी बतियां,
यह हेत बिषै से कुढ़ाय रहे ॥
चहै जीभ निरंतर गान पदै,
है लुब्ध रही नहीं माने कहे ।
कबलो तरसै यदुराज कहो,
बहके अँग कांति न माने कहे ॥

❀ ११८ ❀

विधि कौन चलै जहँ पै तहपै,
जन आरत भारत वास करे ।
शिव शेष गणेश थके से भये,
बनिगे जन मोहन शर्ण परे ॥
महिमा पद कंज अनूपम की,
कहि कौन सके मृदु योग सरे ।
कीरति गुन गान सप्रेम चहैं,
करि देहु दया भव पार करे ॥

❀ ११९ ❀

विनती सुनिये भगवान मेरी,
चरनो के समीप बुला तो सही ।

गुन गाय रिझावे मनावे तुम्हे,
जन हेत चही प्रिया चर्ण गही ॥
करुणा कर हेर मुरारी द्रुतै,
हम आश्रित मोहन मान कही ।
यम फाँस कटै भव ताप मिटै,
मन भावन कीरति चाह यही ॥

* १२० *

चरणो के तरे हमहूँ तरवै,
जस गौतम नारि अहल्या तरी ।
हमहूँ पग धोउब आँसुन से,
जस धोय निसाद प्रमोद धरी ।
हमहूँ बनवै पग आनन से,
सबरी गणिका गति जौन सरी ।
तन कीरति दैधद भेटि मिली,
गज कंज को दीन बुलाबो हरी ॥

* १२१ *

हम मानव तो केहु भाँति नहीं,
जबलो अपनइहो न बाँह धरी ।
अपनाय लियो वसिदेव निमित्त,
ध्रुवौ हित द्रिष्टि सनेह करी ।
प्रह्लाद के मान बचाय लियो,

जन ऊँच निवास प्रभा पसरी।
यह कीरति तो दीनानाथ वही,
चहती पदत्रान निवास करी ।।

* १२२ *

कहि जाय न नाथ कछू हमसे,
हम औगुन खान सदा की अहै।
हम औ पुनि कृत्ति हमार सोई,
करुणा निधि कोर कटाक्ष चहै।
जप यज्ञ अनेक करे न सरे,
अघ पावन चर्ण अभीत लहै।
पद माधव धारि पुनीत भये,
केतनौ सोई कीरति आस गहै॥

* १२३ *

समझावो हतै इमे आय मुरार,
दुराव करो कस दासन से।
हम आपहि के है बिरान नहीं,
तकसीर क्षमौ मृदु हाँसन से।
बिगड़ी जो न होत तो काहे दुवार,
पड़ी हम रोइत पापन से।
दीनानाथ बनी गति कीरति की,
करुणा निधि दीठि प्रकासन से॥

❀ १२४ ❀

बहके दृग देखे बिना न रहैं,
मन मोहनि मोहन मूरत के।
झपके पलकैं अलकैं छकिके,
बलिहारी लखा तेरी शूरत के।
बिथराय गयी अँखियां अँग मैं,
उलझी बस है गई शूरत के।
दीनानाथ मिलै पद कीरति का,
तन प्रान रहे लखि शूरत के॥

❀ १२५ ❀

सत कर्म कमाय लहैं पदका,
निस्कर्म करै फल नाथ तुम्हीं।
जप यज्ञ अनेकन दान प्रकार,
सनेह तुही सर वस्व तुही।
तन मन धन अर्पण चर्ण करे,
गुन गान करूँ सुख तूही तुही।
पद ध्यान धरूँ भव ताप हरूँ,
वर मांगत कीरति तूही तुही॥

❀ १२६ ❀

दीनानाथ अहा यह नाम अनूप,
हृदय में चरन पधराये रहै।

मन जीति अखण्ड निहारा करै,
मन मोहन चित्त समाये रहै।
करि प्रेम प्रधान विलोकि छटा,
प्रिय माधव हाँथ बिकाये रहै।
तन मन धन वारि समाधि धरै,
कीरति पद यंत्र बनाये रहै॥

❀ १२७ ❀

मन मोहन से दृग लागि गये,
तब लाज से काह प्रयोजन है।
बृजराज बिना कल नाहि परै,
परिवार से काह प्रयोजन है।
मन बावर मोहनि सूरत मैं,
फिर भंग से काह प्रयोजन है।
दीनानाथ के प्रेम रँगी कुरीति,
रँग और से काह प्रयोजन है॥

❀ १२८ ❀

हमतो कलपइहै तबै दीनानाथ,
लगइहैं हदै पद कञ्ज जबै।
जब अइहो इतै सुख देन छितै,
बिरहा कि बुझाउब ताप तबै॥
अबही हम रोय वियोग रहीं,

हरी ऐहो इतै समुझाइहो कबै ।
कीरति हित दर्श दिखाव प्रभू,
सुख अंमृत वह बरसाइहो कबै ॥

* १२९ *

दृग लागे निबाह गोविन्द करो,
अकुलाय हृदय कल नाहिं परै ।
बिन देखे मनोहर सूरत श्याम,
घड़ी पल जोजन सी गुजरै ॥
कसकै अब धीर धरै जियरा,
गुनगान बिना भव नाहिं तरै ।
मन मोहन कीरति दीन विलोकि,
दया करि प्रीति निबाहा करै ॥

* १३० *

कबहूँ ढिग मोहिं बोलइहो हरी,
कितो ऐहो मुरारी बताव भला ।
अपने जन आश्रित दासन की,
कबहूँ सुधि लैहो कि नाहिं लला ॥
दिन रात निहारत पंथ बितै,
भगवान समय अब जात चला ।
दीनानाथ अनाथन नाथ तुहीं,
भवतारन कीरति पद सबला ॥

* १३१ *

दुख जानकी केर निवार दिया,
कुल रावण राम संहार किया।
हनुमान पठाय धरायो प्रबोध,
हमै सब भाँति बिसार दिया॥
हम चाहत प्रान तजै न बनै,
पद यंतर धारि जियावै जिया।
कब आय बिरोधी बिषै जग के,
बिनसइहो बनइहो कीर्ति पिया॥

* १३२ *

हरि आवत गाय चराय लखें,
छबि साँवलि मूरत पाव परै।
शिर मोर मुकुट श्रुति कुंडल की,
अलकावलि युत मुख ध्यान करै॥
मन मोहन दरशन हेत अली,
दृग ललक लगी कल नाहिं धरै।
दीनानाथ सनेही है कीरति के,
गुन गान करै हरि शरन तरै॥

* १३३ *

हम चाहत हैं गुन गान करै,
जग तारन आय सहाय करो।

सत पंथ बिगाड़ करी कलि ने,
प्रभू दासन कर कल्याण करो ॥
अवनी में बिना पद कंज परे,
छुटि हैं नहि पातक ध्यान करो ।
बनिहै नहि कीरति दीनानाथ,
पग धारि महातम नाम करो ।

* १३४ *

दर्शन बिन काल जन जइहैं मरी,
कहु मारे को मारि के पुन्य चही ।
प्रिया भारत के बिसरै न हमै,
है पारथ सारथि डोर गही ।।
करि दीन प्रतिज्ञा न शस्त्र गहूं,
जन भीष्म प्रतिज्ञा मान चही ।
कर चक्रलै नाथ तुराय चले,
वह कीर्ति दयाफिर क्यू नचही ।।

* १३५ *

जन शासन हित वहि भारत में,
फिर आवहु कृष्ण मुरारी प्रभू ।
अपनाय गरीब गरीब नेवाज,
प्रथा कलिराज विदार प्रभू ।।
सुन माय कहैं प्रथमै की प्रथा,

यह आरत केर पुकार प्रभू ॥
दीनानाथ विभूति तुम्हार सबै,
पद कीरति दै अब तार प्रभू ॥

❀ १३६ ❀

बिलगाय न राखो दया तो करो,
बिन दृष्टि कृपा निधि कौन बनी ।
बिन पाये पदारविंद हरिजू,
बनिहै न सुनो ब्रह्माण्ड धनी ॥
त्रिभुवन है बसा पद आन तरे,
कर दीन निरास न नील मनी ।
गुन गावन दे सुख छावन दे,
कीरति प्रीतम पद प्रेम सनी ॥

॥ १३७ ॥

बलिहार हुँ मोर मुकुट वाले,
तुम पर तन मन धन वार चुकी ।
मुसक्यान मनोहर मूरत पै,
जिय की सब ताप बुझायचुकी ॥
छुटिहैं कबहूं न लगी अब तो,
हिरदे मन मोहन धार चुकी ।
बनि हैं गुन गान सप्रेम सने,
कीरति हित आपन जान चुकी ॥

॥ १३८ ॥

वृजराज सुनो बिनती इतनी,
गलियों मे न शोर मचाया करो।
मग आया करो मन मोहन तो,
मुरली किन टेर सुनाया करो॥
हम आपन आज चिरान भई,
फिर याद नई न देवाया करो।
दीनानाथ मिलो जब कीरति का,
तब जानी कृपाल की दाया करो॥

॥ १३९ ॥

मिलि हो तो जरूर हमै भगवन्,
दृढ़ लागी है आस चरन मे हमारी।
प्रभु दीनता हेत सदा करते,
हम दीन अकिंचन है गिरधारी॥
तुम ही से बनी है बनी फिर हूँ,
जब होव महापद की भिखियारी
गुन गान करै मन मोद भरै,
अपनइहो तबै कीरति बनवारी॥

* १४० *

रखिये जस त्रिभुवन नाथ धनी,
रहवै हम तैसहि हे प्रभु जी।

देहों जो अभै कर धार विरै,
लहवै निरवान हमू प्रभु जी ॥
दरियाव में डारि हो तो बहवै,
काढ़हो करदै गहवै प्रभु जी।
जस भावै तुम्है है सही हमको,
कीरत्ति सरवस्व तुम्हीं प्रभु जी ।

* १४१ *

कबहूं दिन माधव एहु रहे,
हमहीं हम सेवन की अधिकारी।
अब वे दिन उलटि परे शिर पै,
हम दूसर है गई कुंज बिहारी ॥
जब कीन स्वीकृत प्रेम वही,
अब दान छोड़ाय दुखै अधिकारी ।
अपनइहो तो फेरि बनी कीरति,
तजिदेहो तो जाई बिगड़ि गति सारी ॥

* १४२ *

कबहूँ तो सनेही रही पदकी,
अब और सनेह सने गिरधारी।
कबहूं नित दरशन देत रहे,
अब दुइज के चन्द भये मन हारी ।
कबहूँ सुख देत रहे मिलके

अप कीर वियोग बिरह अधिकारी ।
कबहूँ सुख दै रमि प्रेम रहे,
अब कीरति की बहनाहि चिन्हारी ।

* १४३ *

हैं जाव मोई जो रही पहिले,
तन मन धन वार व रीझो तुम्ही ।
दीनानाथ दया करिहो करिहो,
हो जीवन के आधारौ तुम्ही ॥
पड़ि जाव वही मग में हमतो,
जहँ आवत जात देखइहो तुम्ही ।
धरिहो पद आन जा कीरति के,
बिगड़ी गति फेर बनइहो तुम्ही ॥

* १४४ *

कबहूँ फिर प्रीतम कृष्ण तुम्है,
मिलबै छवि धारब नैनन में ।
जिय की सब ताप बुझउबै हरी,
पद धारि हृदय सुख चैनन में ॥
कबहूँ फिर प्रेम प्रमोदन से,
फँसि जइहैं दयाल के सैनन में ।
गुन गान व दर्शन निशिदिन गही,
पद कीर्ति लहै श्रुत बैनन में ॥

॥ १४५ ॥

विनती हृषीकेश सुनौ इतनी,
उर कंज निवास करै क पड़ी ।
इन्द्री जित होय लहैं पदका,
यह हेत हमार गहै क पड़ी ॥
तन मन धन जीवन अर्घ करै,
मल प्रेम कि माल धरै क पड़ी ॥
सतकर्म किवार लगाय के थाम्हि,
मनैमन कीर्ति रहै क पड़ी ॥

॥ १४६ ॥

अब अहहो उजाड़ हृदय हमरे,
तब जानब दीनदायल बड़े हो ।
रिषि नारि समान ३बनइहो हमै,
तबही अघ मोचन सत्य बड़े हो ॥
जब लेहौ बचाय बिषै जग से,
तब ईश हृदय के बड़े से बड़े हो ।
कलि भार हटाय सनाथ करो,
जब कीर्ति बढ़ै गिरधारी बड़े हो ॥

॥ १४७ ॥

हम दीन बने तु दयाल बनो,
हम पाप करै तुम पातक हारी ।

गरीब बने हम तो वृजराज,
गरीब नेवाज कहाव मुरारी ॥
हम कष्ट सहै दुख तामस से,
करुणानिधि तू करुणा कर भारी ।
जब कीरति श्रीपद त्राग बने,
तब धारि चरन प्रभु कीजे सुखारी ।।

* १४८ *

सुनो श्रीकृष्ण सुदामा के मीत,
सम्हार करो जन दीन दुखारी ।
कंगाल है भारत प्रेम बिना,
पद दै जन जीवन कीजे सुखारी ।
कलिराज विराजि गये मति में,
गुनगान दे भारत के हितकारी ।
तुम छाड़ि त्रिलोकन और कछू,
निरभै कर कीरति क्लेश मुरारी ।

* १४९ *

कबहूँ न बनी कबहूँ न बनी,
दीन्हे बिन शर्ण गरीबन का ।
तुमहीं हो प्रभू तुमही हो प्रभू,
दीनानाथ करो हित दीनन का ।।
अब आई प्रबल कलिराज घड़ी,

पद ज्ञान मिलै लवलीगन का।
बनिहैं सब भाँति गोविन्द भजे,
भजि है कीरति तजि हीनन का॥

* १५० *

सब आय बसो हरि चरन तरे,
कलि की गति नाथ समीप नहीं।
दीनानाथ दयाल हैं दीन बनो,
कुछ खर्च तुम्हार लगैगा नहीं॥
त्रिभुवन में यही यक सार चरन,
भ्रम त्यागि भजो दुख है है नहीं।
कीरति के दयानिधि दीनदयाल,
बढ़इहैं दया कुछ शंक नहीं॥

* १५१ *

हृदयेश तु आव हृदय हमरे,
छवि देखब रहब उरायन में।
प्रीतम दिन रात चरन भजबै,
उमगान रहब गुन गायन में।
बिन देखे न लागै जिया हमरा,
फँसिहैं न बहुरि जग मायन में।
प्रभु आय मिलो कल नाहि परै,
कीरति बनी नाथ के दायन में॥

* १५३ *

दृग सूझ परै कुछ और नहीं,
तुमहीं तुम रोमन रोम रमे।
तुम्हरे हित जीवन तनमन धन,
तुमही दिन रात हृदय में रमे॥
तुम बिन नहिं देह न नेह जगत,
तुमही चित प्रीतम योग रमे।
तुम ही तुम कीरति हेत हरे,
पद प्रेम सप्रीत सरोज रमे॥

* १५४ *

उलझावो हमैं न विषै जग में,
तजि के प्रभु और न चाह धरै।
हमहैं प्रभु के प्रभु हैं हमरे,
सब ऐगुन मोहन माफ करै॥
जप यज्ञ अनेकन हेत तुम्हार,
करै तबहूँ समता न सरै।
गुनगान मनोहर मूरत ध्यान,
जपै दृढ़ नाम तो कीर्ति तरै॥

* १५५ *

वह कौन घरी फिर ह्वैहै जबै,
हरि अइहैं बिहाल अनाथन देखी।

अपनइहैं बहुरि यह भारत का,
हरि हैं दुख दीन दया कब देखी ।
कब होइहैं गरीब सनाथ कहो,
कब देहैं हृदय मुद कष्टत देखी ।
बिनती यह कीर्ति कबैतरि हैं ।
कब दैहैं दर्श जन भारत देखी ॥

❋ १५६ ❋

हम चाहत गान व ध्यान प्रभू,
कलि राज सोहात नहीं सत रीती ।
करि देत सदा बस इन्द्रिन के,
विषई जग जीव नसै कलि हीती ।
यग यूथ भरे मद तामष के,
सत पंथ निवारि करैं अन रीती ।
पद धारि व्यथा अवनी कि हरो ।
कलिराज जरैं मुह कीरति जीती ।

❋ १५७ ❋

कबहूँ यदुराज गरीबन की,
करते सुधि साँच कहो समझाई ।
महरानिन मध्य विराजि हरी,
सुधि कर्त कबौ बृज की सुखदाई ।
कबहूँ बृज नारि अभागिन की,

सुध आवत ऊधव है यदुराई ।
बिन देखे रहें नहिं कीरनि का,
अब छाड़ि गये पिया नेह बिहाई ॥

* १५७ *

कबहूँ वृन्दावन गोवरधन,
सुधि आवत गोवन ग्वाल कन्हाई
यमुना तट को हरि रोकि खड़े,
लखि आलिन रीझ रहे मुसक्याई
दधि दान व मान करै चर्चा,
करि हाहा रहें जब कै चपलाई
कर जोर निहोर बढ़ाय सप्रेम,
वही अब कीर्ति पड़ी बिलखाई ॥

* १५८ *

उनहीं मन मोहन माधव हेत,
जहाँन कि लाज नहीं हम मानी ।
अब ओई मुरारी रमे मथुरा,
तुम ऊधो सिखावतयोग सुज्ञानी ।।
नित रार करै मग रोकि अड़ै,
दधि माँखन खाय करे बहु हानी ।
तबहूँ तन मन धन वारि चरन,
कीरति दीनानाथ के हाँथ बिकानी ॥

* १५९ *

मथुरा में बसे नहीं श्याम हरी,
मन हीं रमे प्रिय कृष्ण मुरारी।
प्राण जियै कहि ग्लान करै,
पद प्रेम कि सेवा मनोरथ भारी।
गुन गान करै जपि नाम तरै,
हमहूँ यह ऊधव नीक बिचारी।
मन मानत नाहिं कहा तबहूं,
कीरति न जियै बिन दर्श बिहारी॥

* १६० *

समझयो बहू बिध ऊधो उन्हें,
जो रमे कुबरी सँग प्रीति बिसारी।
अवतार धरी जन हेत हरी,
अनरीत करी कंस कुँज बिहारी॥
कुल नाम प्रथा अनुसार चलै,
नहि होय अयस जग में गिधारी।
मरि जाब सबै युत कीरति के,
कुबरी लहि पाप सोहाग पसारी॥

* १६१ *

नहिं होतं हृदय संतोष बखानत,
कूबरि माधव के गुन भारी।

भगवंतिन ह्वै रहौं चेरी अबै,
जरबै हम मोहन विरह दवारी।
गुन गाय निबाहब प्रीत हरी,
मरिजाब तो होय यहूँ हित भारी॥
छुटि जइहैं व्यथा बिन दर्शनकी,
बनि हैं गति कीरति सोई सुखारी॥

॥ १६२ ॥

बस में मन है नहि माधव जी,
कहैं कासे नहीं कछ नेक परै।
भ्रहि जाय कसक न वियोग हरी,
धड़के छतियाँ दृग नीर ढरे॥
हम चाहत श्याम सँयोग सदा,
पद धार हृदय सुख चैन करै।
छबि अद्भुत श्याम हरै मन को,
कीरति प्रभु चाह सप्रेम तरै॥

॥ १६३ ॥

पीर हरो अब श्याम सनेह कि,
अन्तर मोहन नाहिं धरी।
बिन देखे व्यथा अँग छीन करै,
कहु कैसे के सेवा सुयोग सरी॥
... प्रेम निवाह करो भगवान,

बिगाड़ो नहीं गति मोरि हरी।
करिहो न दया मन मोहन तो,
यह कीरति कस भौ पार करी॥

❀ १६४ ❀

हम सूरतपै बिरझाय रही,
दीनानाथ तुम्हें जन प्यार नहीं है।
दगदर्श बिना अकुलाय रहे,
तुम्हरे मन यह सरकार नहीं है॥
हम इच्छुक चर्ण स्पर्श करै,
तुम्हरे दीनन दरकार नहीं है।
दिन रात हृदय पद धारा चहै,
तुम्हरे पद कीर्ति गुजार नहीं है॥

❀ १६५ ❀

हम योग्ग नहीं दीनानाथ तबौ,
सत नाम कि आपन लाज करी।
बिस तामस कर्म में अंग लगे,
पद सेवा प्रभू स्वीकार करी॥
जन दीन बिलोकि सहाय करौ,
करुणा निधान सब कष्ट हरी।
करि हो न दया मनमोहन तो,
यह कीरति कस भौ पार तरी॥

॥ १६६ ॥

पहिले तो दयानिधि नाथ रहे,
कबसे यह रीत नई गहि राखी।
असनेह से गोप बधू घर जाय,
चोरिय के माँखन मोहन चाखो॥
कबहूँ न गही निठुराई हरी,
जन दीन दुखी लखि शर्ण सुराखी।
युग सर्व कियो हित भक्तन का,
अब कीरति बेर हठै हठ राखी॥

॥ १६७ ॥

मन होत ढिढोर पिटाय जहाँन,
बतावै की श्याम भये निरमोही।
तन मन धन जीवन प्रान अधार,
बिना पद श्याम नहीं गति मोहीं॥
तजि दीन न कीन दया प्रभु जी,
कहिये दुख हाय नहीं कस मोहीं।
पद धारि हृदय निरबान लहै,
कह कीरति सोई मिलै पद मोही॥

॥ १६८ ॥

हम श्याम समीप नहीं चहती,
चहतीं पद सेव प्रमोद प्रसारी।

रस रँग प्रसंग करै न चरी,
हिरदै तोकहै छबि साँवर धारी ॥
चक्र शीश वियोग धरी शिर में,
बस काह हमार जो नाथ बिसारी ।
गुनगान करै जन शर्ण वरै,
यह कीरति चाह निवाह मुरारी ॥

❀ १६९ ❀

विपरीत प्रतीत भई दीनानाथ,
कहे जो रहे चह दीन विसारी ।
सब भाँति प्रभू आधार तुम्हीं,
अपराध कहा प्रभु अन्तर धारी ॥
अंतर हृदयेश पदारविन्द,
हमरे जग में नहि और चिन्हारी ।
सनमान करो य धरो हुचिता,
कीरति के तुही प्रिया कृष्ण मुरारी ॥

❀ १७० ❀

पद धारे हृदय बिनै कैसे जिऐ,
तुमहीं प्रभु जीवन प्राण अहो ।
बिन सेवा चरनं कृत कौन सरै,
तुमही जप यज्ञ न सार अहो ॥
गुन गाने बिना जग कैसे रहैं,

तुम दीहन के निरधार भरो।
यह हेत दयानिधि दीनानाथ,
पद कीरति देहु कृपाकर भरो॥
* १७१ *
भवतारन श्री गोबिन्द मुरार,
करो फिर याद गरीबन की।
युग द्वापर त्रेता सतो में करी,
परवाह विशेष गरीबन की॥
कलि के जन प्रथम अनेक तरे,
कलि घोर पुकार गरीबन की।
पग धारे बिना नहि कीर्ति बनी,
करुणाकर नाथ गरीबन की॥
* १७२ *
करुणानिधान यह भारत का,
फिर आय सम्हार करै क पड़ी।
कलि बैठि गये अपनाय जहाँन,
तमो अज्ञान हरै क पड़ी॥
दुख दासन घोर बचाव करो,
पग भारत हेत धरै क पड़ी।
सब है प्रभु के प्रभु हैं सब के,
कीरति निरवाह करे क पड़ी॥

* १७३ *

दीनानाथ दया वह डारी कहाँ,
जन्म पूर्व जनै हित चाह धरी,
अब तो निठुराई बढ़ी इतनी,
जन आर्त गोहार न श्रौण परी ॥
कबहूँ यह रीत गही न प्रथम्,
अब बाढ़त ताप न आये हरी।
कीरति बिन दर्श उदास रहै,
करुणा निधि काहे न दृष्टि करी ॥

* १७४ *

कुछ शेष बिपत्ति नहीं रहिगै,
जब से जन दीन बिसारी मुरारी।
निसि वासर चर्ण सरोज रंगी,
दिन दून बढ़ी उर प्रीत विहारी ॥
कहि जाय नहीं दुखिया मुख से,
तन जारि दई विरहा कि दवारी।
जग से जन से घर से नहिं काम,
तबौ दीनानाथ न कीर्ति चिन्हारी ॥

* १७५ *

तबहूँ तुम्हें आई दया न हरी,
जब कोऊ न पूछत बात हमरी।

कबहूँ दुखियान कि बात सुनी,
अब आय नहीं जन कर्ता सुखारी ॥
अपमान यही अपनाये नहीं,
करि दीन बनाय बिरान मुरारी ।
कह जाय कहैं, को सुनै हमरी,
तुमही जब कीरति दीन् बिसारी ॥

* १७६ *

हम चाहैं नहीं निज कष्ट बखान,
बँधै नहिं धीरज नैन डुबावै ।
कुछ तो मन रोकि सहा करतो,
कुछ बिनै नुसार चर्ण धरि जावै ।
हम पूछ रही दीनानाथ सुनो,
हम दीन, तबै तु दयाल कहावै ।
बिरहा से जली सर्ब देह हरी,
कीरति हित नाथ कृपा बरसावै ॥

* १७७ *

हमसे तो सही नहिं जाय व्यथा,
दीनानाथ धरो पद शीश हमारे ।
जग फीक पड़ा भगवान बिना,
यह देह वृथा बिन दर्श तुम्हारे ॥
कलि धर्म प्रचार अनेक भये,

बचिहैं न बिना पद कंज पखारे ।
कीरति हित दीन सम्हार करो,
बनिहैं न बिना बृजराज पधारे ।
॥ १७८ ॥
दीनानाथ गोविन्द मुकुंद प्रभू,
हृदयेश तुम्हें बहु वार प्रनामै ।
करुणा कर देहु दयानिधि तो,
शरनन ह्वै आपन जन्म बनामै ॥
अब होहु दयाल मनाबै तुम्हें,
बिमुखी जन चाह करै अपनामै ।
बिन सेवा सनेह बढ़ै नहर्ष,
यह कीरति की प्रभु साथ पुरामै ।
॥ १७९ ॥
बक वादन में कुछ सार नहीं,
यक रोज जरूर मरै क पड़ी ।
मरि जाव तो जाव कहां बृजराज,
येहू तो निबाहन नाथ पड़ी ॥
जियरा तरसै बिन दर्शन के,
सुलझावन दृग अरझै क पड़ी ।
बिलखाय रहे अँग सेवा विना,
मिलि कीर्ति निबाह करै क पड़ी ।

॥ १८० ॥

दुख देखि जो नाथ प्रमोद बढ़ै,
तो दुखै दुख शीश में धारे रहेगी।
हम नाथ वियोग नहीं चहती,
जस होय निदेश निबाहे रहेगी॥
हम माँग रही गुनगान प्रभू,
करि हाथ कृपा कस पार रहेगी।
दीनानाथ दयाल दया जो करी,
फिर काहे न कीर्ति सम्हार रहेगी॥

॥ १८१ ॥

कबहूँ न सनेही कि बान गई,
पद मोहन प्रेम के ऐन कन्हाई।
गुन गाय समाय गये, पद में,
जन भक्ति सनेह समोय बनाई॥
अब तो वह प्रेम भुढ़ाय गयो,
पीतम गहि लीन नई निठुराई।
मरि जाब वियोगिन सेवा बिना,
कीरति हित नाथ दया तब आई॥

॥ १८२ ॥

बेचन जात रही दधि प्रात,
मिले मग मोहन नंद के लाला।

मोर मुकुट श्रुति कुण्डल गोल,
कपोल सँजे अँग भूषन आला ॥
छबि नील मणी मधुरी मुसक्यानि,
प्रभा प्रति अंग मनोज विशाला ।
जाय फस्यो मन चर्ण त्रिभंग,
विदेह भई लखि कीर्ति कृपाला ॥
* १८३ *
बिहरैं बंसी वट यमुन पुलिन,
वृन्दाबन कुंजन त्रिभुवन पावन ।
सँग ग्वाल बराबर बैस लिये,
लकुटी लै चले बन धेनु चरावन ॥
अँग पीत बसन दृग कै तिरछे,
कुछ गावत मधुर मनोज बढ़ावन ।
बंसी मन भावन प्राण हरी,
कीरति बलिहार बिको बिन दामन ॥
* १८४ *
जब जात भरैं पनियाँ जमुना,
तब देखें कदम्ब तरे बन माली ।
अरभे पग युगल लखौं कंचन,
लकुटी अनुहार छकी छवि आली ॥
तिरछे झुकि नैन किये तिरछे,

फहरात पिताम्बर चितौन माली।
कहु कैसे भरै पनियाँ जनियाँ,
कीरति दीनानाथ खड़े गहि डाली॥

* १८५ *

चित चाहत राखै तुम्हैं दीनानाथ,
सदै अपने मन भीतर बाँधी।
दृग चाह निहारा करौ तुमको,
तन चाहत सेवा लगाय समाधी॥
कर चाह सरोज पदै परसै,
अँग चाह प्रभू संग कर्ता उपाधी।
कीरति तुम्हैं चाहति लाख तरा,
जब श्याम चहैं मिटै तामस आँधी॥

* १८६ *

महा दुखिया दृग रोय रहे,
भगवान दया कह खोय गई!
दरशन बिन एक घड़ी कलना,
अबसेर कृपाल कृपा कि भई॥
तब आवत धाय सनेह भरे,
हम देखै महा छबि दया मई।
अब कीरति के दीनानाथ नहीं,
बिपरीत प्रतीत सबै है गई॥

* १८७ *

समझइहौ हमैं कह जान चुकौ,
दीनानाथ विरान निरा ह्वै गये।
पहिली कुछ रीत रही ना प्रभू,
हम दास है आस बिना ह्वै गये॥
मिलि जइहौ जो आरत भारतको,
घटि हैं नै कछू ह्वै दर्श गये।
अब और के और मुकुंद भये,
कीरति के समै उलटे ह्वै गये॥

* १८८ *

पहिले तो दया अँग अंग रहीं,
अब आई दयाल कठोर भये।
पहिले जन दीन निहारत हीं,
करुणा निधि कोरन नीर छये॥
वह हाय स्वभाव नहीं प्रभु का,
जस भारत में जन ओर भये।
दुख कीरति हेत प्रभु हैं सोई,
दीनानाथ विगाड़ 'वियोग भये॥

* १८९ *

कब अइहौ मुकुंद बताव भला,
हम दर्श बिना कल कैसे के पावै।

निठुराइ सोहाय नहीं अब तो,
मन भावन आवन युक्ति बनावै ॥
दृग में उर में पुनि श्रोणन में,
निवसाय तुम्हें अह्लाद बढ़ावै।
दीनानाथ बनी जन राखे पदै,
करुणा कर कीरति आस नसावै ॥

* १९० *

गुन गाय बढ़ावौ प्रमोद हदै,
सुख पूरब पाय जियै जन सारे।
यह हेत पधारब नीक प्रभू,
सब माधव सेवा प्रमोद पसारे ॥
दुखिया दृग पंथ निहार रहे,
कब अइहा मनोहर श्याम हमारे।
दृढ़ आस लगाय हृदय कीरति,
दीनानाथ दयाल लगाव किनारे ॥

* १९१ *

दीन दयाल पुकार सुनो,
मम चाह दर्श करुणा अब कीजै।
दुख पूर हृदै जन त्राहि करै,
पग धारि महीजन पावन कीजै ॥
नंद सेवन जीवन दे बृजराज,

बनाय समाज बिगाड़ न कीजे।
हरनाथ जपै सुचि नाम प्रभू,
कीरति हित प्रेम प्रदान तो कीजे॥

* १९२ *

जबहीं जब होय दुखी बसुधा,
दुख मेटत हो तबहीं अविनासी।
जबहीं जब तामस जोर करै,
तम नास करो बैकुंठ निवासी॥
जबहीं जब दीनन कष्ट परै,
तबही जन [illegible]सु कीन सुपासी।
जबहीं जन प्रेम प्रमोद भरै,
तबही अपनावत कीर्ति हुलासी॥

* १९३ *

अपनाय हरो सब कष्ट हरी,
जस भार्त पार्थ दुखदीन जु खोई।
ज्यों द्रौपदी लाज बचाय लियो,
त्यों लाज शर्न हरि राखहु जोई॥
जस कीन पुनीत अजामिल गीध,
करो जन भारत के हित सोई।
कलि बार पुकार है कीरति की,
बिन नाथ मिले कल्यान न होई॥

* १९४ *

प्रभू आवो नहीं विष बूड़ि रहे,
बिषई जग होत बिगाड़ बिहारी।
बिन चच्छु भये कलिज्ञान हरे,
दरसाउ मनोहर रूप मुरारी॥
गजराज गह्यो जल बूड़त ज्यों,
कलि बूड़त भात करो रखवारी।
कीरति दीनानाथ निबाह करो,
जग फैलि बसंत बिसै कि भ्यारी।

* १९५ *

अब आये धाम परभात हरी,
नहि काम यहाँ चले जाहु बिहारी।
जहँ रात रहे जिन हाँथ गहे,
करि साथ रमे अति प्रेम पसारी॥
नहि है अब लाज सुनो बृजराज,
कहावत दीनन के हितकारी।
पद कीर्ति रहे नहि रीति बिगार,
हरो दुख नाथ बढ़ावहु न रारी॥

* १९६ *

करुणा करि फेरि मिलो हमसे,
मनमोहन चूक हृदय न बिचारो।

बिन देखे पड़ै कल नाहि हरी,
मन भावन दास चरन दइ डारो ॥
कब अइहौ बिहारी बताव सही,
अब काहे सनेहिन रीन बिगारो।
कीरति दीनानाथ दया की घरी,
पद दै जन आपन पार उतारो ॥

❀ १९७ ❀

बिथराय रही अलकै मुख पै,
सम नागशिशू मुख पै लहरावै।
फँसि जात बिलोकत चन्द्र छटा,
मनमोहन अंग अनंग लजावै ॥
छिपि जात ज्यों दामिनि मैं घन मैं,
मृदु हाँसी सांई उनमाद बढ़ावै।
हँस श्याम रँगे पद प्रेम सने,
कहु कैसे के कीरति धीरज आवै ॥

❀ १९८ ❀

हिरदै बसिगै मधुरी मुसक्यान,
कहो मनमोहन कैसे जियेगी।
तुमही तुम नैनन औजन में,
प्रियतम स्वर रोमन रोम कढ़ैगी ॥
गुन गान व ध्यान तुही मोहन,

जप नाम बिना जग नाहिं रमेगी।
कीरति हित दीनदयाल मिलो,
बिन दर्श व्यथा अब नाहिं सहेगी॥

* १९९ *

अबहूँ तकसीर धरे उरमें,
मन भावन ह्वै गये गाढ़ दई।
रोवत दिन रात पिरात हृदय,
दर्शन् कि ललक हिय बाढ़ गई॥
नहीं आये प्रभू बिलमाये कहाँ,
दीनानाथ दयाल हैं दीन भई।
मिलिहैं पद कीरति प्रेम सनी,
अपनइहैं कृपा करुणा कि मई॥

* २०० *

बिलखाय रही निशि नींद नहीं,
जबसे वह साँवलि मूरत देखी।
मिलिहैं कब प्रान अधार हमै,
कलपैं बिन मोहन सूरत देखी॥
कढ़िहैं यम फाँस कबै धरिहैं,
सिर हाँथ मुकुन्द निरंतर देखी।
करिहैं कब कीर्ति सनाथ प्रभू,
हरिहै भवताप कबै जन देखी॥

* २०१ *

कहि जाय रमै ब्रज राज सुनो,
हम चाहत दर्शसु देहु मुरारी।
कहिहैं न विषै बितिहैं न समय,
बिन सेवन प्रीतम गिर्वरधारी।।
लगिहैं न कहूँ मन बेगि मिलो,
शरणागत हैं हम दीन दुखारी।
दुख दूर करो उर मोद भरो,
भर भावन कीरति के हितकारी।।

* २०२ *

कहि जात नहीं दुख गाथ बियोग,
सबै कुछ जानत अन्तरजामी।
पदहीन सदा दुखवंतिन हैं,
बिन सेव मिले त्रिभुवन पति स्वामी।।
पद कंज बिना अकुलात हृदय,
दै दर्श हरो दुख हे खगगामी।
कीरति हित मोहन आय मिलो,
बहुवार तुम्हैं अखिलेश नमामी।।

* २०३ *

आग लगै तो बुझै जल से,
अब ताप नसै पद कंज के धारे।

घाम नसै शिर छत्र धरे,
मद क्रोध नशै सत कर्म प्रसारे॥
शीत नशै तन बस्त्र धरे,
भ्रम तामस जाय शरण के सहारे।
कीरति कहि नाम करै गुनगाय,
मिलै दीनानाथ सनेह पसारे॥

* २०४ *

सतकर्म करै गुनगान प्रमोद,
रँगै रँग श्याम प्रमोद बढ़ाई।
भजै मनमोहन दीन दयाल,
तजैं मद मोह हृदय कि खोटाई॥
करै दृढ़ प्रेम कटै जगजाल,
चखै फिर ब्रह्मानंद मिठाई।
करै सत संग मिटे अतरंग,
करै कीरति दीनानाथ सहाई॥

* २०५ *

भजै गोबिन्द तजै जग फन्द,
मिलै मनमोहन आहि आई।
मिटै दुख द्वन्द लहैं आनंद,
जपै दीनानाथ करैंगे सहाई॥
कहैं गिरधारी बनी गृति सारी,

विसारि विषै पद धारि दृढ़ाई।
चलै अतुराई परै पग जाई,
हैं कीर्ति कन्हाई करैगें सहाई॥
॥ २०६ ॥
बढ़ै असनेह कटै बिषजाल,
करो जनहेत तजो कुटिलाई।
बिलाव समय पद सेव सप्रेम,
नहीं सब भाँति बिगाड़ देखाई॥
करो पद ध्यान चलो निरवान,
यही सुखसार यही मनुसाई।
करो गुन गान लहो कल्यान,
दयालू दया निधि कीरति पाई॥
॥ २०७ ॥
गये दिन आवै नहीं फिर हाँथ,
वृथा भ्रम छाड़ि भजो यदुराई।
अनेकन ग्रंथ सुपंथ अनेक,
उपाय अनेकन रीत सोहाई॥
अनेकन संतने सार है एक,
पदैं मन मोहन के सुखदाई।
करो गुनै ग्यान मिलै भगवान,
यही सुचि रीति सो कीरति पाई॥

॥ २०८ ॥

अरे मन मूढ़ प्रभू अति गूढ़,
करो अति शीघ्र मिलै कि उपाई।
भये जब बूढ़ बिषै जग ढूँढ़,
निश्चित्त बुरी धरि खान कमाई॥
बढ़े मद काम भये बेकाम,
फिरै जग क्रूर कर्म छितलाई।
नहीं कछु त्रास करैं यम नास,
गोबिन्द के नाम न कीर्ति बनाई॥

❀ २०९ ❀

करो मुख बन्द सुनो श्रुनि धार,
कहैं जस व्यासादिक गोहराई।
करो सतसंग मिटै अत रंग,
गहो पद मोहन होय सफाई॥
जपो हरि नाम करो गुन गान,
मिले भव तारन आपहि आई।
धरो दृढ़ प्रेम लहो फिर छेम,
यहै जग कीरति मुक्ति बड़ाई॥

❀ २११ ❀

बिना दीनानाथ बनी नहिं बात,
रहे अलसाय उठो हरषाई।
भजो ततकाल दयाल कृपाल,

कृपा करि दासन द्वैहैं बचाई ॥
तजो जग हेत करो तन चेन,
बिलम्ब भये मिलिहैं न कन्हाई ।
किये कछि जोर भई मति भोर,
न कीरति प्रीतम गुन गन गाई ।

* २१२ *

उदै भये भान खिले सर कंज,
हृदय न खिले हरि ध्यान लगाई ।
भये तम नास महा परकास,
उठो जन मोहन सेव तुराई ॥
करो गुन गान इष्ट पद ठान,
घने अज्ञान प्रमाद बढ़ाई ।
नहीं सुख आन कहा नर मान,
बनाई जो कीरति है हैं सहाई ॥

* २१३ *

प्राण सुनो मन मोहन बात,
लगावो न बेर हृदय अकुलानो ।
बिन देखे सनेह निवाह नहीं,
करि दीनन चाह दर्श हित मानो ।
नहिं आतम ज्ञान सम्हार सकै,
गुनगान प्रमोद अथाह प्रधानो ॥

पग धारे बिना कहो कैसे बने,
कीरति हित माधव सर बल जानों ॥
❀ २१४ ❀
कबहूँ इन आँखिन तम्ह बिलोकि,
दया करि हो फिर कुंज बिहारी ।
कबहूँ फिर चर्ण लगाय हृदय,
मन मोद लहें गोपिन रिझवारी ॥
कबहूँ गुन गान करी पद ध्यान,
बहुरि यह भारत होई सुखारी ।
कबहूँ मनमोहन कृष्ण मुरारी,
बनइहोयकीरति शरणन धारी ॥
❀ २१५ ❀
अवनी पति अइहो बनइहो बहुरि,
तब जानब दीनन के हितकारी ।
करि हो तम नास महा परकास,
हृदय के अधीश तो होब सुखारी ।
जब देहों हमैं गुन गान सप्रेम,
कहइहो तबै हितकार मुरारी ।
जब अइहो गोविन्द पुकार करै,
तब कीरति के प्रीतम गिरधारी ॥
❀ २१६ ❀
सत कर्म प्रधान कहे निधिवेद,

न जानत नाम प्रताप हरी।
गजराज उबार्‌यो है नामहिं से,
ध्रुव नामहि से पद खास धरी॥
प्रहलाद को नाम बचाय लियो,
पति द्रौपदी नाम सम्हार करी।
गति पाई अजामिल नाम रटे,
कलि कीरति माधव नाम तरी॥

❀ २१७ ❀

अद्भुत महिमा पद की दीनानाथ,
त्रिविक्रम पात्र पसार दई।
विधि धोय कमंडल श्रेष्ठ भये,
शिव धारि जटा जग सुयस लई॥
सुरकाज कियो बलि शर्ण लियो,
धनि है पद कंज प्रमोद मई।
कलि नासि महा अघ दूर करो,
पद कीरति को अब देहु सोई॥

॥ २१८ ॥

प्रभु दर्श वियोग मरैं कलि जन,
पुनि चाहत मीठ प्रकाश वही।
कह शोच अबेर लगाय रहे,
दीनानाथ पधारब होय सही॥
मरबै अन भावत जो तुमको,

प्रथमैं मन में कछु नाहिं गही।
गिरि भार उठाये जनै के हितै,
गिरि डारि के मारित कीर्ति तही॥
॥ २१९ ॥
यशुदा जी के लाल बसे दृग में,
तन जीवन प्रान रहैं न रहे।
मनमोहन मूरत जाय फँसा,
सनमान जहाँ न रहे न रहे॥
वृज राज से उत्तम प्रेम लगा,
परिवार सनेह रहे न रहे।
जब कीर्ति बिकाय गई पद मे,
तब योग प्रयोग रहे न रहे॥
॥ २२० ॥
कुछ संसै नहीं भवपार करै,
हम चाहत प्रीतम नंद के लालन।
मन मोहि लियो मधुरी मुसक्यान,
निवारि सके नहिं प्रेम के जालन॥
दृढ़ चर्ण धरे करिहैं हमहूँ,
जस लीन महाँ नँद गोप कि वालन।
तन मन धन देव चढ़ाय पदै,
रखिहैं तब कीरति चर्ण कृपालन॥

* २२१ *

वै तबहूँ पदमें रहवै,
मिलि लेहु नहीं तो उपाय करो जू।
रि कर्म सुतो उलझवैं तुम्हैं,
हृदयेश हृदय उजियार करो जू॥
गान करै अघ जन्न टरै,
जप नाम उदार सुधार करो जू।
रति प्रीतम दीनानाथ सुनो,
जन दीन गोहार नेवार करो जू॥

* २२२ *

से दीनानाथ कि चेरि भई,
तब से मन आपहि आय थिरानो।
आय गये अनुभौ प्रभु जी,
तब तामस ज्ञान महान नसानो॥
दीन प्रमोद लही पदका,
मन माधव रूप में जाय समानो।
कौन सनाथ अनाथन का,
तब कीरति प्रेम न काहे प्रधानो॥

॥ २२३ ॥

देह मिलावन हार ,गुरु,
सन पंथ गहो सत संगत से।
मैल जरै कृत सत मद से

करि शौंचहु मोहन रंगत से ॥
पद धारि हृदय गुन गान करो,
भड़काव न ज्ञान कुसंगत से।
कीरति के दयानिधिनाथ मिलै,
चरणामृत चाखहु पंगत से ॥

॥ २२४ ॥

मन आय बसी छबि सोहन मोहन,
माधव नंद बबा के लला की ॥
पटपीत अनूप गरे बनमाल,
सुकुण्डल गोल कपोल प्रभा की।
शिर मोर कि पंख त्रिभंग छटा,
हिय काके बसी न अपूरब झांकी ॥
गुण गाय प्रमोद सुकीर्ति भरे,
कवि सोई यथा मति कृष्ण कथा की।

दोहा

बार बार बन्दौ चरन, कीरति के उर हार
तनमन धन गुनगान हित, अर्पि चरन भवतार
कोटिन ब्रह्माण्डाधि पति, आर्त दीन रखवार
हरो क्लेश हरिहैं बहुरि, कीर्ति आस दृढ़ धार

॥ श्री दीनानाथार्पण मस्तु ॥

॥ इति ॥

॥ श्री कीर्ति लता समाप्तं ॥

मुद्रक— ... दरी सर्वोदय ...

'कीर्ति-लता'

शुद्धि-पत्र

नम्बर शुमार	नम्बर पेज	नम्बर छन्द	नम्बर पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	४	४	३	वानी	वनी
२	४	५	५	गो	गी
३	६	१०	७	'जावन	जीवन
४	६	१०	८	आनद	आनँद
५	९	१५	६	दर	दूर
६	९	१६	३	आढ़इया	ओढ़इया
७	१२	२३	३	हनि	हानि
८	१४	२८	२	कृष्ण	कृष्णा
९	२९	६३	७	दीना बन्धु	दीनबन्धु
१०	३१	६७	३	खालि	खोलि
११	३३	७१	७	ज	जू
१२	३३	७३	७	सग	संग
१३	३५	७७	७	रँग	रंग
१४	३५	७८	१	को	की
१५	३६	७९	८	ऊधा	ऊधो
१६	३६	८०	४	हा	हो
१७	३७	८२	५	अँग	अंग
१८	३८	८३	४	जहात	जहान
१९	३८	८५	२	अनरीन	अनरीत
२०	३८	८५	५	माहन	मोहन
२१	३९	८६	४	भोइन	मोहन
२२	३९	८६	६	वाढ़या	बाढ़यो
२३	३९	८६	६	अधम	अधर्म
२४	३९	८६	७	कीति	कीर्ति
२५	३९	८७	६	दहु	देहु
२६	४०	८८	६	अब	अघ
२७	४०	८८	६	दमोदप्रति	दामोदप्रति
२८	४०	८९	७	अँत्त	अंत
२९	४०	९०	२	बिन	विन
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पथ	पंथ

३१	४१	९१	६	नह्यो	नहीं
३२	४२	९३	२	रखवार रि	रखवारीर
३३	४२	९३	५	नद	नंद
३४	४४	९८	३	दानानाथ	दीनानाथ
३५	४५	९९	६	प्रबाल	प्रबाह
३६	४५	१००	७	जावा	जावो
३७	४७	१०५	२	दान	दीन
३८	४७	१०५	५	अर्धन्नसी	अधर्वंसी
३९	४७	१०६	५	कुर्मुकुटी	शिर्मुकुट
४०	५०	१११	७	करित	कीरति
४१	५२	११५	३	घरया	घरयो
४२	५३	११७	४	विबै	विवै
४३	५४	१२०	२	अहल्या	अहिल्या
४४	५४	१२०	८	बुलावो	बुलायो
४५	५६	१२४	२	माहन	मोहन
४६	५७	१२७	७	कुरीति	कीरति
४७	५८	१२९	४	घड़ा	घड़ी
४८	५८	१२९	८	निवाहा	निवाहो
४९	६०	१३३	६	छुट	छुटि
५०	६०	१३४	७	कर	कर
५१	६४	१४३	६	देखइहो	देखइहो
५२	७५	१६८	३	रँग	रंग
५३	७७	१७३	२	जम	जन्म
५४	८१	१८४	३	कचन	कंचन
५५	८२	१८५	६	सग	सँग
५६	८४	१९०	६	अइहा	अइहो
५७	८६	१९४	६	भात	भार्त
५८	८८	१९८	७	मिला	मिलो
५९	९०	२०३	३	थरे	धरे
६०	९३	२१३	१	आप	आर्थि
६१	९५	२१६	२	उवरथा	उवरयो
६२	९७	२२१	५	जम्र	जन्म
६३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

'कीर्ति-लता'

शुद्धि-पत्र

नम्बर शुमार	नम्बर पेज	नम्बर छन्द	नम्बर पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	४८	१०८	५	वाच	वीच
२	५५	१२३	१	हतै इमे	इतै हमे
३	५७	१२८	२	कज	कंज
४	६४	१४३	७	जा	जो
५	७०	१५७	८	प्रिया	प्रिय
६	७६	१७०	६	देहन	देहिन
७	७७	१७३	२	पूव	पूर्व
८	७९	१७८	६	साथ	साध
९	८३	१८८	१	अग	अंग
१०	८३	१८८	२	आई	ओई
११	८३	१८९	२	कैस	कैसे
१२	८७	१९६	७	का	की
१३	९०	२०४	६	ब्रह्मानद	ब्रह्मानंद
१४	९४	२१४	१	तस	तसं

